Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 10
अंक - 47
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

28 जमादिउल अव्वल, 1446-47 हिज्री क़मरी, 20 नबुव्वत 1404 हिज्री शम्सी, 20 नवम्बर 2025 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ اللّٰہَ لَا یَخۡفٰی
عَلَیۡہِ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ
وَلَا فِی السَّمَآءِ ○

(सूरः आलेइमरान: 6)

अनुवाद: और तेरे रब ने निश्चय कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की उपासना न करो और माता-पिता के साथ भलाई का व्यवहार करो। यदि उन दोनों में से कोई एक तेरे पास बुढ़ापे को पहुँच जाए या वे दोनों ही, तो उन्हें 'उफ़' तक न कहना और न ही उन्हें डाँटना और उनसे नम्रता और आदर के साथ बोलना।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

माता-पिता की सेवा और संबंधों का निर्वाह

عَنۡ اَبِیۡ هُرَیۡرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡهُ قَالَ: جَآءَ رَجُلٌ اِلٰی رَسُوۡلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ فَقَالَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ! مَنۡ اَحَقُّ النَّاسِ بِحُسۡنِ صَحَابَتِیۡ؟ قَالَ: اُمُّکَ۔ قَالَ ثُمَّ مَنۡ؟ قَالَ: اُمُّکَ۔ قَالَ ثُمَّ مَنۡ؟ قَالَ: اُمُّکَ۔ قَالَ ثُمَّ مَنۡ؟ قَالَ: اَبُوۡکَ۔ وَفِیۡ رِوَایَۃٍ، یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ! مَنۡ اَحَقُّ بِحُسۡنِ الصُّحۡبَۃِ؟ قَالَ اُمُّکَ ثُمَّ اُمُّکَ ثُمَّ اُمُّکَ ثُمَّ اَبُوۡکَ ثُمَّ اَدۡنَاکَ اَدۡنَاکَ۔

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि लोगों में से मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे अधिक अधिकारी कौन है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तेरी माँ। फिर उसने पूछा, फिर कौन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तेरी माँ। उसने पूछा, फिर कौन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तेरी माँ। उसने चौथी बार पूछा, फिर कौन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, माँ के बाद तेरा पिता तेरे अच्छे व्यवहार का सबसे अधिक अधिकारी है, फिर क्रम से निकटतम रिश्तेदार।

(बुख़ारी, किताबुल् -अदब, बाब मन अहक़्क़ुन नास बि-हुस्निस सुह्बत, और मुस्लिम)(उद्धृत, हदीसक़ुत्स सालेहीन, रचयिता मलिक सैफुर्रहमान साहब, हदीस संख्या 394)

★ ★ ★

खुदा तआला ने यह चाहा है कि किसी दूसरे की उपासना न करो और माता-पिता के साथ भलाई करो

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

खुदा तआला ने यह चाहा है कि किसी दूसरे की उपासना न करो और माता-पिता के साथ भलाई करो। वास्तव में कैसी पालनहार की विशेषता है कि मनुष्य बच्चा होता है और किसी प्रकार की शक्ति नहीं रखता। इस अवस्था में माँ क्या-क्या सेवाएँ करती है और पिता इस अवस्था में माँ के महत्वपूर्ण कार्यों का कैसा उत्तरदायी होता है। खुदा तआला ने केवल अपने अनुग्रह से निर्बल सृष्टि की देखभाल के लिए दो स्थान उत्पन्न कर दिए हैं और अपने प्रेम के प्रकाश से प्रेम की एक झलक उनमें डाल दी है। परंतु याद रखना चाहिए कि माता-पिता का प्रेम अस्थायी है और खुदा तआला का प्रेम वास्तविक है और जब तक हृदयों में खुदा तआला की ओर से उसका आवाहन न हो, कोई भी व्यक्ति चाहे मित्र हो या कोई बराबर दर्जे का हो या कोई शासक हो, किसी से प्रेम नहीं कर सकता और यह खुदा तआला की पूर्ण पालनहार की विशेषता का रहस्य है कि माता-पिता बच्चों से ऐसा प्रेम करते हैं कि उनकी देखभाल में हर प्रकार के दुख सीने पर सहर्ष सहते हैं, यहाँ तक कि उनके जीवन के लिए मरने से भी नहीं चूकते।

(रोवेदाद जलसा दुआ, पृष्ठ संख्या 11)

फला तकुल लहुमा उफ़्फ़िन वला तनहरहुमा व कुल लहुमा कौलन करीमा' अर्थात अपने माता-पिता को घृणा का शब्द मत कहो और ऐसी बातें उनसे न करो जिनमें उनकी बुज़ुर्गी का ध्यान न हो। इस आयत के संबोधित तो आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही हैं, किंतु वास्तव में वचन का लक्ष्य उम्मत की ओर है, क्योंकि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पिता और माता आपके बाल्यकाल में ही स्वर्गवासी हो चुके थे

शेष पृष्ठ 09 पर

इस्लाम ने माता-पिता की सेवा के लिए विशेष निर्देश दिए हैं

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह बनी इसराईल की आयत संख्या 24

وَقَضٰی رَبُّکَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِیَّاہُ وَبِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا ؕ اِمَّا یَبۡلُغَنَّ عِنۡدَکَ الۡکِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوۡ کِلٰهُمَا فَلَا تَقُلۡ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنۡهَرۡهُمَا وَقُلۡ لَّهُمَا قَوۡلًا کَرِیۡمًا ○

'व कज़ा रब्बुका अल्ला तअबुदू इल्ला इय्याहु व बिल वालिदैन इहसाना। इम्मा यबलुगन्ना इंदकल किबरा अहदुहुमा औ किलाहुमा फला तकुल लहुमा उफ़्फ़िन वला तनहरहुमा व कुल लहुमा कौलन करीमा'

की व्याख्या में फ़रमाते हैं: अतः एकेश्वरवाद के आदेश के बाद माता-पिता के विषय में भलाई का आदेश दिया। क्योंकि एक उपकार की कद्र दूसरे उपकार की कद्र की ओर ध्यान को मोड़ती है।

'व बिल वालिदैन इहसाना'। इसका संबंध 'अन' पर है। पूरा वाक्य यह है: 'अन अहसिनू बिल वालिदैन इहसाना'। अर्थात खुदा तआला ने एक तो यह आदेश दिया है कि खुदा तआला के सिवा किसी को उपास्य न बनाओ, और एक यह कि माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। इस वाक्य में क्या सूक्ष्म अंदाज़ अपनाया गया है। खुदा तआला के उपकारों का मनुष्य बदला नहीं दे सकता। इसलिए खुदा तआला के स्मरण में यह कहा गया कि उपकार तो तुम कर नहीं सकते, अतः अत्याचार से तो बचो। लेकिन माता-पिता के उपकार का बदला दिया जा सकता है। इसलिए उनके बारे में सकारात्मक आदेश दिया।

इस्लाम ने माता-पिता की सेवा के लिए विशेष निर्देश दिए हैं। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: 'मन इदरका अहद वालिदैही सुम्मा लम युग्फर लहु फाबअदहुल्लाहु अज़्ज व जल्ल'।

(रवायत अहमद, इब्ने कसीर, जिल्द 6, पृष्ठ 61)

अर्थात जिस व्यक्ति को अपने माता-पिता में से किसी की सेवा का अवसर मिले और फिर भी उसके पाप क्षमा न किए जाएँ, तो खुदा तआला उस पर दूरी की प्रार्थना करे। अभिप्राय यह कि भलाई का ऐसा उच्च अवसर मिलने पर भी यदि उसने खुदा तआला का अनुग्रह प्राप्त नहीं किया, तो स्वर्ग तक पहुँचने के लिए ऐसे व्यक्ति के पास कोई साधन नहीं है।

(तफसीर-ए-कबीर, भाग चौथा, पृष्ठ 321, मुद्रित क़ादियान 2010)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अदी बिन हातिम से फ़रमाया:

हे अदी! शायद तुझे इस धर्म में प्रवेश करने से मुसलमानों की निर्धनता रोक रही है। खुदा तआला की शपथ! शीघ्र ही इतना धन बहाया जाएगा कि उसे लेने वाला नहीं मिलेगा और शायद उनके शत्रुओं की बहुलता भी तुझे इस धर्म में प्रवेश करने से रोक रही है।

शत्रु बहुत हैं इस्लाम के, इसलिए शायद तुम रुक रहे हो। खुदा तआला की शपथ! तू शीघ्र ही स्त्री के विषय में सुनेगा कि वह अपने ऊँट पर 'हीरह' से प्रस्थान करके इस घर खाना काबा की यात्रा करेगी और उसे कोई भय नहीं होगा और शायद इस धर्म में प्रवेश करने से तुझे यह बात भी रोक रही हो कि शासन और अधिकार दूसरों के पास है, तो खुदा तआला की शपथ! तू शीघ्र ही बाबिल की भूमि के सफेद महलों के विषय में सुनेगा कि वे उनके लिए खोल दिए गए हैं और किसरा के खजाने खोल दिए जाएँगे। यह बात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन बार दोहराई।

तबूक के युद्ध का मूल कारण यही प्रतीत होता है कि मक्का विजय होने के बाद और हुनैन के युद्ध में बनू हवाजिन जैसे अत्यंत शक्तिशाली कबीले को भी चेतावनीपूर्ण पराजय देने के बाद और अरब के आस-पास के सभी कबीलों पर मुसलमानों को प्रभुत्व मिलने के बाद, यहूदी और ईसाई और कपटाचारी एक बार फिर सिर जोड़कर बैठे और अपनी हर कोशिश को विफल होते देखकर उस समय की महाशक्ति अर्थात रोम के सम्राट से सहायता माँगने का निर्णय किया और इसके लिए उन्होंने एक बहुत बड़ी और बहुत ही खतरनाक योजना बनाई।

मक्का की विजय के बाद घटित होने वाले कुछ सैन्य दलों और तबूक के युद्ध के संदर्भ में पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र सीरत का पावन वर्णन

साथ ही रब्वा में मस्जिद महदी पर हुए हमले का संक्षिप्त उल्लेख

अल्लाह तआला उन आतंकवादियों और कानून तोड़ने वालों और जमात के विरोधियों को शीघ्र पकड़े...

अल्लाह तआला उन सरकारों को भी बुद्धि दे और शीघ्र ही अल्लाह तआला जमात के पक्ष में निशान प्रकट फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 अक्टूबर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मक्का की विजय के बाद और मदीना वापस आने के बाद भी कुछ महत्वपूर्ण कार्य आए, जिनका मैं उल्लेख करूँगा।

एक उल्लेख है सैन्य दल क़ैस बिन सअद बिन उबादा का। यह 'सुदा' की ओर सन् आठ हिजरी में हुआ। जब आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम 'जिअराना' से मदीना वापस आए, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस्लाम के आह्वान के लिए विभिन्न क्षेत्रों की ओर सेना भेजी। अतः मुहाजिर बिन अबी उमय्या को 'सनआ' (जो यमन की राजधानी है) की ओर और ज़ियाद बिन लबीद को 'हज़रमौत' की ओर प्रस्थान कराया और एक सेना तैयार की, जिसका सेनापति क़ैस बिन सअद को नियुक्त फ़रमाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ैस बिन सअद को चार सौ व्यक्तियों के साथ रवाना फ़रमाया ताकि वह यमन के कबीले 'सुदा' को इस्लाम का आह्वान दें। दूसरे कथन के अनुसार आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया कि वह कबीले 'सुदा' से युद्ध करें। यदि यह परंपरा सही है, यदि यह समाचार सही है, बात सही है, और यह परंपरा अधिक सही लगती है, तो फिर निश्चित रूप से इस कबीले की ओर से मुसलमानों को क्षति पहुँचाने की सूचनाएँ आई होंगी, जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह कदम उठाया। लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसके लिए एक सफेद झंडा बाँधा और एक काला ध्वज उनके हवाले किया। उन्होंने 'क़नात' घाटी के एक ओर पड़ाव डाला। 'क़नात' मदीना और 'उहद' के बीच मदीना की तीन प्रसिद्ध घाटियों में से एक घाटी है। हज़रत क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु 'खज़रज' के नेता हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु के पुत्र थे। हज़रत क़ैस बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु की गणना महान सहाबा में होती थी। मक्का की विजय के अवसर पर आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु से झंडा वापस लिया था, तो उनके इसी पुत्र क़ैस को दिया था। यह बहुत उच्च राय वाले और बहादुर घुड़सवार समझे जाते थे। उदारता और दानशीलता में भी बहुत प्रसिद्ध थे।

हज़रत क़ैस 'क़नात' में पड़ाव डाले हुए थे कि कबीले 'सुदा' के एक व्यक्ति ज़ियाद बिन हारिस का वहाँ से गुजर हुआ। यह कुछ समय पहले मुसलमान हो चुका था। जब उसे ज्ञात हुआ कि यह सेना उनके कबीले पर आक्रमण करने जा रही है, तो उस समय उसे आश्चर्य क्यों नहीं हुआ? निश्चित ही उसे पता होगा कि यह कबीले वाले मुसलमानों को क्षति पहुँचाना चाहते हैं और यह अब उसके उत्तर में आ रहे हैं। बहरहाल, जब उसने यह देखा कि उनके कबीले पर आक्रमण होने वाला है, तो वह वहाँ से सीधा रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और प्रार्थना की कि आपने जो सेना भेजी है, उसे वापस बुला लें। मैं अपनी कौम की जिम्मेदारी देता हूँ और उसके इस्लाम स्वीकार करने का भी वादा करता हूँ। अर्थात एक जिम्मेदारी तो यह है कि वह मुसलमानों पर आक्रमण नहीं करेंगे, क्षति नहीं पहुँचाएँगे, और दूसरा यह कि इस्लाम भी धीरे-धीरे स्वीकार कर लेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी बात स्वीकार

करते हुए सेना को वापस बुला लिया। इस बात से भी प्रकट होता है कि क्षेत्र जीतने के उद्देश्य से या कौम को अधीन करने के उद्देश्य से आपने नहीं भेजा था, बल्कि इस्लाम का संदेश पहुँचाने के लिए भेजा था और मुसलमानों को सुरक्षित करना लक्ष्य था और जिस प्रकार हज़रत ज़ियाद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने वादा किया था, उन्होंने उस पर अमल किया और समय-समय पर उनकी कौम के लोग इस्लाम स्वीकार करते रहे। यदि केवल जबरदस्ती मुसलमान बनाना उद्देश्य होता, तो धीरे-धीरे समझ आने पर इस्लाम स्वीकार करने की अनुमति न होती। सीधा कहा जाता कि या तो इस्लाम स्वीकार कर लो या तलवार है। बहरहाल, उसके बाद जब उन्होंने धीरे-धीरे प्रचार किया, तो इस्लाम भी उन्होंने स्वीकार कर लिया, क्योंकि आक्रमण करना, ज़बरदस्ती मुसलमान बनाना, इस्लाम की शिक्षा के भी विरुद्ध है और आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अपने कर्म और रीति के भी विरुद्ध है। जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु को ही उनका नेता नियुक्त कर दिया और आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी कौम को एक सुरक्षा-पत्र भी लिखकर दिया था।

(शरहुल अल्लामा अज़-ज़रकानी अलाल मवाहिबुल लदुन्निया, जिल्द 4, पृष्ठ 28-29, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1996)(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 349-350; जिल्द 5, पृष्ठ 222, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1993)(नूरुल यक़ीन फी सीरते सैय्यिदिल मुरसलीन, पृष्ठ 247, अल-मकतबतुल आसरिया लित तिबाअत वन नशर, 2000) (फरहंगे सीरत, पृष्ठ 239, ज़वार एकेडमी पब्लिकेशन्स, कराची, 2003) (दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 387 से 389, बज़्मे इकबाल, लाहौर)

और जो मुसलमान हो जाए, उसे सुरक्षा-पत्र लिखकर देने की आवश्यकता तो नहीं होती। यह इसलिए लिखा गया था कि उनमें से कुछ मुसलमान नहीं हुए थे।

सैन्य दल: हज़रत उयैना बिन हिस्न फ़ज़ारी, बनी तमीम की ओर।

इसका भी उल्लेख मिलता है। यह सैन्य दल मुहर्रम नौ हिजरी में बनू तमीम की ओर हज़रत उयैना बिन हिस्न के नेतृत्व में हुआ। इसका पृष्ठभूमि यह है कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिश्र बिन सुफ्यान रज़ियल्लाहु अन्हु को कबीले 'खुज़ाअह' की शाखा 'बनू कअब' की ओर दान (अर्थात ज़कात की संपत्ति) की वसूली के लिए भेजा। यह लोग 'सुक़या' और बनू तमीम की भूमि के बीच बसे हुए थे। अतः हज़रत बिश्र बिन सुफ्यान रज़ियल्लाहु अन्हु के आदेश पर बनू खुज़ाअह का धन हर ओर से उनके पास जमा होने लगा। बनू तमीम, जो मुसलमान नहीं थे, उन्हें यह संपत्ति बहुत अधिक लगी, तो वे कहने लगे कि यह क्यों अनुचित रूप से तुम्हारा धन ले रहा है? और अपनी तलवारें निकाल लीं। बनू खुज़ाअह ने कहा कि हमने धर्म इस्लाम स्वीकार कर लिया है और यह हमारे धर्म का आदेश है, हम दे रहे हैं। तुम्हें क्या तकलीफ है? लेकिन बनू तमीम ने कहा कि यह बिश्र बिन सुफ्यान रज़ियल्लाहु अन्हु किसी ऊँट तक भी नहीं पहुँच सकता। झगड़े और युद्ध-विवाद की इस स्थिति को देखकर हज़रत बिश्र बिन सुफ्यान रज़ियल्लाहु अन्हु बिना किसी प्रकार की वसूली के स्वयं ही वहाँ से वापस चले आए। यह बात बनू खुज़ाअह पर अत्यंत गहरी लगी, उन्हें बहुत बुरा लगा। बनू खुज़ाअह ने बनू तमीम पर आक्रमण किया और यह कहते हुए उन्हें वहाँ से निकाल दिया कि यदि तुम्हारा रिश्ता न होता, तो तुम अपने शहरों तक न पहुँच पाते। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से अवश्य हमें किसी परीक्षा का सामना करना पड़ेगा। अब यह ऐसी बात है जो तुमने की है और हमने ज़कात नहीं दी। तुम लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रतिनिधि से परहेज किया और उसे हमारी संपत्ति की ज़कात लेने से रोक दिया।

दूसरी ओर, हज़रत बिश्र बिन सुफ्यान रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हालात से अवगत कराया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कौन इस कौम को सबक सिखाएगा? सबसे पहले हज़रत उयैना बिन हिस्न ने 'लब्बैक' कहा। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उयैना बिन हिस्न को पचास अरब घुड़सवारों के साथ बनू तमीम की ओर रवाना फ़रमाया, जिनमें मुहाजिरीन और अंसार में से कोई भी नहीं था। उयैना अपने साथियों के साथ रवाना हुए। वे रात को चलते और सुबह को छिप जाते, यहाँ तक कि वे मरुस्थल में पहुँच गए जहाँ बनू तमीम ठहरे हुए थे और अपने मवेशी चरा रहे थे। जब बनू तमीम ने इस सेना को देखा, तो वे सब कुछ छोड़कर वहाँ से भाग गए। उनके ग्यारह पुरुष, ग्यारह स्त्रियाँ और तीस बच्चे बंदी बनाए गए, जिन्हें वे मदीना ले आए और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश के अनुसार हज़रत रमला बिंत हारिस के घर में ठहरा दिया गया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 212, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 1993)

बाद में बनू तमीम के अस्सी या नब्बे प्रमुख सदस्यों सेयुक्त एक प्रतिनिधिमंडल आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। इस प्रतिनिधिमंडल में उनके कबीले के कुछ सक्षम वक्ता कवि और वक्ता भी शामिल थे। ये सब मस्जिद में उस समय आए जब लोग ज़ुहर की नमाज के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रतिनिधिमंडल के लोगों ने समझा कि शायद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने देर कर दी है, तो उनमें से कुछ लोग आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कक्ष के निकट जाकर ऊँचे स्वर में पुकार कर कहने लगे कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हमारी ओर बाहर आइए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ लाए, तो ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वार्तालाप करने लगे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर की नमाज पढ़ाई और नमाज पढ़कर मस्जिद के आँगन में बैठ गए। प्रतिनिधिमंडल के नेता ने कहा कि हम काव्य और वक्तृत्व में आपसे श्रेष्ठता प्रदर्शन चाहते हैं। अर्थात भाषण और कविता में हमसे मुकाबला कर लें कि किस कौम का वक्ता और कवि उच्च कोटि का है। हमें गर्व है कि हमारे वक्ता भी अच्छे हैं, हमारे कवि भी अच्छे हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि काव्य और वर्णन में श्रेष्ठता प्रदर्शन मेरे भेजे जाने का उद्देश्य नहीं है। मैं इसलिए नहीं आया कि गर्व से अपनी कविता और वर्णन और भाषण को प्रस्तुत करूँ। मेरा उद्देश्य तो खुदा तआला की ओर लाना है, लेकिन तुम्हारे आने का यही उद्देश्य है, तो अपनी कला का प्रदर्शन करो। यदि तुम चाहते हो, तो फिर ठीक है, कर लो, हम उसका उत्तर दे देंगे। प्रतिनिधिमंडल वालों ने अपने वक्ता 'उतारिद बिन हाजिब' को आगे किया। उसने भाषण दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हु को उत्तर देने के लिए कहा। उन्होंने उसके उत्तर में ज़बरदस्त भाषण दिया, जो उस शत्रु के भाषण पर प्रभावी हो गया।

(तारीखुल खमीस, जिल्द 3, पृष्ठ 4, 'बअस उयैना बिन हिस्न इला बनी तमीम', दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2009)

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु उस समय सभा में उपस्थित नहीं थे। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें बुलवाया। उसके बाद प्रतिनिधिमंडल के कवि 'जिब्रिकान बिन बद्र' ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं, फिर आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि वह उसके मुकाबले में अपना काव्य सुनाएँ। हज़रत हस्सान ने उसका तत्काल उत्तर दिया।

(सीरते इब्ने कसीर, किताबुल वुफूदिल वारिदीन इला रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 4, पृष्ठ 81, दारुल मअरिफा, 1976)(अल-बिदाया वन-निहाया, जिल्द 5, पृष्ठ 45-46, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2001)

जब हज़रत हस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु समाप्त हुए और प्रतिनिधिमंडल के लोग आपस में इकट्ठे बैठे, तो 'अक़रअ बिन हाबिस', जो इस प्रतिनिधिमंडल के साथ आए थे, उन्होंने अपने साथियों के सामने स्वतः टिप्पणी की कि उनका वक्ता हमारे वक्ता से बढ़कर है और उनका कवि हमारे कवि से कहीं अधिक उच्च कोटि का है। ये हमसे बहुत आगे हैं। फिर जब लोग समाप्त हो गए, तो उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। कुछ परंपराओं के अनुसार, हज़रत अक़रअ बिन हाबिस रज़ियल्लाहु अन्हु कुछ समय पहले ही इस्लाम ला चुके थे और अब वे प्रतिनिधिमंडल के साथ दोबारा उपस्थित हुए थे।

आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू तमीम के इस्लाम स्वीकार कर लेने के बाद उनके बंदी वापस लौटा दिए और सबको पुरस्कार और सम्मान से भी नवाज़ा। एक परंपरा के अनुसार, प्रतिनिधिमंडल में शामिल प्रत्येक व्यक्ति को पाँच-पाँच सौ दिरहम प्रदान फ़रमाए।

(तारीख तिबरी, जिल्द 2, पृष्ठ 190, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1987) (ओसोदुल ग़ाबा, जिल्द 1, पृष्ठ 264, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2003)(दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 403, बज़्मे इकबाल, लाहौर)

इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल 'उतारिद बिन हाजिब' ने, जिसका उल्लेख पहले गुजर चुका है, इस्लाम स्वीकार करने के बाद आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में एक चादर उपहार के रूप में प्रस्तुत की। यह चादर उसे 'किसरा' ने दी थी। कहा जाता है कि यह चादर बहुत उत्तम किस्म की रेशमी चादर थी, जिस पर सोने का काम किया गया था। सहाबा ने चादर की बारीकी और कोमलता देखी, तो वे बहुत प्रभावित हुए और उसे अपने हाथों से छूकर देखने लगे। सहाबा का यह अंदाज देखकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम इस चादर पर इतने आश्चर्यचकित हो रहे हो? स्वर्ग में 'सअद' की चादरें उनसे बहुत अधिक कोमल और बहुत अधिक अच्छी हैं।

(सहीह बुखारी, किताबुल हिबा, बाब कुबूलुल हदिय्यति मिनल मुशरिकीन, रिवायत 2615) (सहीह मुस्लिम, किताबुल फज़ाइलिस सहाबा, बाब मिन फज़ाइले सअद बिन मुआज़, रिवायत 6348) (सुननुत तिरमिज़ी, किताबुल मनाकिब, बाब मनाकिबे सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस संख्या 3847)(ओसोदुल ग़ाबा, जिल्द 4, पृष्ठ 40, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2003)

हज़रत मिर्जा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी एक सामान्य ढंग से इस घटना पर टिप्पणी की है। आपने कहा है कि "एक अरसे के बाद जब आपको किसी स्थान से कुछ रेशमी वस्त्र उपहार स्वरूप आए, तो कुछ सहाबा ने उन्हें देखकर उनकी कोमलता और मुलायमपन का बड़े आश्चर्य के साथ उल्लेख किया और उसे एक असाधारण वस्तु माना। आपने फ़रमाया: "क्या तुम उनकी कोमलता पर आश्चर्य करते हो? खुदा तआला की शपथ! स्वर्ग में 'सअद' की चादरें उनसे बहुत अधिक कोमल और बहुत अधिक अच्छी हैं।" आपका यह कथन एक रूपक के ढंग में था, जिसमें 'सअद' रज़ियल्लाहु अन्हु के उस आराम के स्थान की ओर संकेत करना अभिप्रेत था, जो उन्हें स्वर्ग में प्राप्त हुआ था, अन्यथा जैसा कि कुरआन शरीफ और हदीसों से सैद्धांतिक रूप से पता चलता है, स्वर्ग की सुख-सुविधाओं का इस दुनिया की सुख-सुविधाओं पर अनुमान नहीं लगाया जा सकता और न ही स्वर्ग की सुख-सुविधाएँ हमारी परिभाषा के अनुसार भौतिक कहला सकती हैं, और सत्य यही है कि जो शब्द कुरआन और हदीस में व्यक्त हुए हैं, उनमें केवल रूपक और उपमा के रूप में सुख-सुविधाओं की पूर्णता की ओर संकेत करना अभिप्रेत है।"

(सीरते खातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहिबजादा मिर्जा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, एम.ए., पृष्ठ 614-615)

फिर एक सैन्य दल 'क़ुत्बा बिन आमिर' का है, जो सफ़र नौ हिजरी में हुआ। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ुत्बा बिन आमिर को बीस व्यक्ति देकर कबीले 'खसअम' की ओर भेजा। एक परंपरा के अनुसार उन्हें 'तबाला' के आस-पास भेजा। यमन के मार्ग में 'तहामा' भूमि में 'तबाला' नगर स्थित है। इसके और मक्का के बीच आठ दिन की दूरी है और अनुमानतः एक सौ छप्पन मील का फासला है और एक परंपरा के अनुसार 'बिशह' के आस-पास भेजा और उन्हें यह आदेश दिया कि एकाएक उन पर आक्रमण करें। ये लोग निश्चित रूप से उपद्रव कर रहे होंगे। रास्ते में उन्होंने एक व्यक्ति को पकड़ा। उससे पूछताछ की, तो उसने अपने आप को गूँगा प्रकट किया, लेकिन जब ये कबीले के निकट पहुँचे, तो उसने चीख-चीख कर अपने कबीले को सचेत करना चाहा। अतः उस धोखे पर उसे मार डाला गया। चूँकि अब कबीले वाले कुछ सतर्क हो चुके थे, इसलिए रात होने की प्रतीक्षा की गई और जब कुछ अंधेरा हो गया, तो मुसलमानों ने एकाएक उन पर आक्रमण कर दिया। कठिन युद्ध हुआ और दोनों पक्षों में बहुत से घायल हुए और विरोधी कबीले के बहुत से लोग मारे गए और हज़रत क़ुत्बा लूट के माल में ऊँट, बकरियाँ और स्त्रियाँ मदीना की ओर लेकर आए। पाँचवाँ हिस्सा निकालने के बाद उनके हिस्से में चार-चार ऊँट या चालीस-चालीस बकरियाँ आईं।

(उद्धृत: मोजमुल बुलदान, जिल्द 2, पृष्ठ 10-11, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत) (फरहंगे सीरत, पृष्ठ 226, ज़वार एकेडमी पब्लिकेशन्स, कराची, 2003) (सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 214, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1993) (शरहुल अल्लामा अज़-ज़रकानी अलाल मवाहिबुल लदुन्निया, जिल्द 4, पृष्ठ 40-41, 'सरिय्या क़ुत्बा इला खसअम', दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 1996) (अत-तबकातुल कुबरा लिब्ने सअद, जिल्द 1, पृष्ठ 460, मुद्रणालय दारुल फिक्र, बैरूत, संस्करण 2012)(तारीखुल खमीस, जिल्द 3, पृष्ठ 5-6, 'बअस क़ुत्बा बिन आमिर इला खसअम', दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 2009)

बहरहाल, उनके उपद्रवों को रोकने के लिए यह आक्रमण करना पड़ा था।

फिर सैन्य दल 'ज़हहाक बिन सुफ्यान किलाबी' का उल्लेख है। यह बनू किलाब की ओर हुआ। यह रबीउल अव्वल नौ हिजरी में हुआ और आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़हहाक बिन सुफ्यान किलाबी को 'क़ुरता' स्थान पर उनके अपने कबीले बनू किलाब की ओर भेजा। 'क़ुरता' बनू बक्र की एक शाखा का नाम है, जो मदीना मुनव्वरा से सात दिन की दूरी पर बसी हुई थी। वे उन्हें नज्द में 'जुज लावह' स्थान पर मिले। उन्होंने इस्लाम का संदेश पहुँचाया, मगर कबीले वालों ने इनकार कर दिया और बात लड़ाई तक पहुँच गई। उन्होंने 'अहले क़ुरता' को पराजित किया और लूट का माल प्राप्त किया।

(फरहंगे सीरत, पृष्ठ 233, ज़वार एकेडमी पब्लिकेशन्स, कराची, 2003) (सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 215, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 1993)(तारीखुल खमीस, जिल्द 3, पृष्ठ 6, 'बअस अज़-ज़हहाक बिन सुफ्यान अल-किलाबी इला बनी किलाब', दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 2009)

इस सैन्य दल की एक ईमान बढ़ाने वाली घटना यह भी है कि 'सलमह बिन क़ुर्त' एक काफिर था, जो विरोधियों के प्रमुखों में शामिल था, किंतु उसका पुत्र 'असैद बिन सलमह', जो मुसलमान हो चुका था, वह मुसलमानों की ओर से इस सेना में शामिल था। जब शत्रु मुसलमानों के आक्रमण का सामना न करते हुए भागा, तो उनमें हज़रत असैद का पिता सलमह भी था। असैद ने अपने पिता का पीछा किया, तो वह जान बचाने के लिए अपने घोड़े समेत पानी में कूद गया। ये भी उसके पीछे गए और पिता को दोबारा इस्लाम का आह्वान दिया कि किसी न किसी प्रकार मेरा पिता नरक से बच जाए, लेकिन पिता ने उत्तर में पुत्र को बुरा-भला कहना आरंभ कर दिया। पुत्र ने जब देखा कि ये अपनी अवज्ञा और विद्रोही रवैये पर कायम हैं, तो पिता के घोड़े की रकाबें काट डालीं और एक दूसरे व्यक्ति ने आकर उसे मार डाला।

(दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 426-427, बज़्मे इकबाल, लाहौर)

बल्कि एक दूसरी परंपरा भी है, उसके अनुसार जब असैद ने मदीना आकर इस्लाम स्वीकार कर लिया, तो उनके बूढ़े पिता ने उन्हें एक पत्र लिखा, जिसमें कुछ कविताएँ थीं, जिसमें अपने बुढ़ापे की उम्र में अपने पुत्र की अवज्ञा का शिकायत की और पुत्र को इस्लाम स्वीकार करने पर व्यंग्य भी किया और लिखा कि वह क्या बातें हैं कि जिसके कारण तुमने अपने बूढ़े पिता को छोड़ दिया और इस्लाम स्वीकार कर लिया। असैद अपने पिता का पत्र लेकर आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और सारी बात निवेदन करके पिता को उत्तर लिखने की अनुमति चाही। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश पर उन्होंने अपने पिता को एक प्रचारात्मक पत्र लिखा, जिसे पढ़कर उनके पिता ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया। यह परंपरा भी इसमें है और अधिक सही लगती है।

(ओसोदुल ग़ाबा, जिल्द 1, पृष्ठ 253-254, 'असैद बिन सलमह' शब्द के अंतर्गत, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2003)

फिर सैन्य दल हज़रत 'अलकमा बिन मुजज़्ज़' रज़ियल्लाहु अन्हु, 'जद्दा' की ओर का उल्लेख है। इब्ने सअद ने लिखा है कि यह सैन्य दल रबीउस्सानी नौ हिजरी में हुआ, जबकि कुछ दूसरी परंपराओं के अनुसार सफ़र नौ हिजरी में हुआ। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सूचना मिली कि अबिसीनिया के लोगों में से कुछ योद्धा 'जद्दा' के तट पर उतरे हैं। कुछ परंपराओं के अनुसार वे मक्का वालों के विरुद्ध लूटपाट करना चाहते थे। एक पुस्तक में लिखा है कि उन लोगों ने समुद्र पार करके मुसलमानों को क्षति पहुँचाने का प्रयास किया।

'जद्दा' मक्का के पश्चिमी समुद्र तट पर बसा एक नगर है। आज भी है। यह हिजाज का एक बड़ा नगर है। मक्का और जद्दा के बीच 75 किलोमीटर की दूरी है, जबकि मदीना से जद्दा की लगभग ढाई सौ मील की दूरी है।

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

आपने हज़रत अलकमा रज़ियल्लाहु अन्हु को तीन सौ व्यक्तियों की कमान देकर उनकी ओर भेजा। जो लोग अबिसीनिया से जद्दा के तट पर उतरे थे, उन्हें हज़रत अलकमा रज़ियल्लाहु अन्हु के आगमन का पता चला, तो वे लोग अपनी नावों पर सवार होकर समुद्र में भाग गए। हज़रत अलकमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक द्वीप तक उनका पीछा किया। इस अभियान की एक उल्लेखनीय घटना है, जो इस प्रकार वर्णित हुई है कि हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से परंपरा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक सेना पर अलकमा बिन मुजज़्ज़ को सेनापति नियुक्त किया और मैं भी उस सेना में था। जब हम निर्धारित स्थान पर पहुँचे और अभियान से निवृत होकर शीघ्र वापस जाने के लिए एक समूह ने अपने सेनापति से अनुमति चाही, तो उन्होंने उसे अनुमति दे दी और उन पर अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी को सेनापति नियुक्त किया। उनकी प्रकृति में हँसी-मज़ाक था। ये लोग रास्ते में उतरे। उन लोगों ने आग जलाई ताकि वे आग तापें।

सुनन इब्ने माजा में आया है कि अब्दुल्लाह सहमी ने कहा: क्या मेरा तुम पर अधिकार नहीं कि तुम सुनो और आज्ञा पालन करो? उन्होंने कहा: क्यों नहीं। उसने कहा: मैं तुम्हें जिस बात का आदेश दूँगा, तुम उस पर अमल करोगे? उन्होंने कहा: हाँ। उसने कहा: मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम इस आग में कूद जाओ। कुछ लोग खड़े हो गए और कूदने के लिए तैयार हो गए। जब उसे विश्वास हो गया कि वे तो कूदने लगे हैं, तो उसने कहा: अपने आप को रोक लो, क्योंकि मैं तो तुमसे केवल मज़ाक कर रहा था। जब वापस आए, तो लोगों ने इस बात का उल्लेख नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'मन अमरकुम मिन्हुम बि-मअसिय्यतिल्लाहि फला तुतीओहु'। उन सेनापतियों में से जो तुम्हें अल्लाह की अवज्ञा का आदेश दे, तो उसकी आज्ञा का पालन न करो।

एक परंपरा में यह है कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'ला ताअता फी मअसिय्यतिल्लाहि इन्नमात ताअतु फिल मअरूफ़'। अर्थात खुदा तआला की अवज्ञा में आज्ञापालन नहीं है। आज्ञापालन तो केवल भली बात में है।

('हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम', लेखिका डॉ. सुहराब अनवर, पृष्ठ 411, दारुल इशाअत) (दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 432, बज़्मे इकबाल, लाहौर) (फरहंगे सीरत, पृष्ठ 86, ज़वार एकेडमी पब्लिकेशन्स, कराची, 2003) (गूगल मैप)(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 216, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 1993) (सुनन इब्ने माजा, किताबुल जिहाद, बाब 'ला ताअता फी मअसिय्यतिल्लाह', हदीस 2863) (अल-लौलौल मकनून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 410, मकतबा दारुस सलाम)(तारीखुल खमीस, जिल्द 3, पृष्ठ 7, 'बअस अलकमा बिन मुजज़्ज़ इलल हबशा', दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 2009)

एक और परंपरा में लिखा है कि जब यह घटना आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में प्रस्तुत हुई, तो आप सख्त नाराज हुए और फ़रमाया: 'लौ दखलूहा मा खरजू मिन्हा इला यौमिल क़ियामति, अत-ताअतु फिल मअरूफ़'। अर्थात यदि वे इसमें प्रवेश करते, तो क़ियामत तक इससे (अर्थात आग से) न निकलते, क्योंकि आज्ञापालन तो भली बात में होता है।

(सहीह बुखारी, किताबुल मग़ाजी, बाब 'सरिय्या अब्दिल्लाह बिन हुज़ाफ़ा अस-सहमी...', रिवायत संख्या 4340)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस घटना को बयान किया है कि "जो कार्य शरीयत के विरुद्ध हों, उनमें आज्ञापालन नहीं है। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक बार एक सहाबी को एक छोटी सी सेना का सरदार बनाकर भेजा। रास्ते में उन्होंने कोई बात कही, जिस पर कुछ सहाबा ने अमल न किया, इस पर वे नाराज हुए और कहने लगे कि मुझे रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुम लोगों पर सेनापति नियुक्त किया है और आपने यह भी फ़रमाया हुआ है कि जिसने मेरे नियुक्त किए हुए सेनापति की आज्ञा का पालन किया, उसने मेरी आज्ञा का पालन किया और जिसने उसकी अवज्ञा की, उसने मेरी अवज्ञा की, और जब मैं रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रतिनिधि हूँ, तो तुमने मेरी अवज्ञा क्यों की? इस पर सहाबा ने कहा कि हम आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। उन्होंने कहा: अच्छा, मैं देखता हूँ कि तुम लोग आज्ञापालन करते हो या नहीं। अतः उन्होंने आग जलाने का आदेश दिया और जब आग जलने लगी, तो सहाबा से कहा कि इसमें कूद पड़ो। कुछ तो तैयार हो गए, लेकिन दूसरों ने उन्हें रोका और कहा कि आज्ञापालन धार्मिक कार्यों में है। उन्हें तो शरीयत की जानकारी नहीं। इस प्रकार आग में कूदकर प्राण देना वर्जित है और खुदा तआला महान का आदेश है कि आत्महत्या नहीं करनी चाहिए। जब यह बात रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने प्रस्तुत हुई, तो आपने इसमें उन लोगों की पुष्टि की, जिन्होंने कहा था कि आग में कूदना वैध नहीं है।"

('खुतबाते महमूद', जिल्द 19, पृष्ठ 260-261, जुमे का खुत्बा, दिनांक 22 अप्रैल 1938)

फिर सैन्य दल हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, 'फुलस' (बनू तय) की ओर का उल्लेख भी आता है। यह रबीउस्सानी नौ हिजरी में हुआ। 'फुलस' नज्द क्षेत्र की एक मूर्ति थी और कबीला 'तय' उसकी उपासना करता था। इस पर मन्नत और चढ़ावे के साथ-साथ शस्त्र भी चढ़ाया करता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को डेढ़ सौ अंसार के साथ, और जिसमें सौ ऊँट और पचास घोड़े थे, बनू तय की मूर्ति 'फुलस' को गिराने के लिए प्रस्थान कराया। इस सेना की एक विशेषता थी कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा शेष सभी लोग अंसार थे। मुहाजिरीन आदि में से कोई नहीं था। बनू तय अरब का एक प्रसिद्ध कबीला है, ये लोग शाम के निकट बसे हुए थे। आपने इस सैन्य दल के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को एक काले रंग का बड़ा झंडा और सफेद रंग का छोटा ध्वज प्रदान फ़रमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सुबह के समय आक्रमण करने वाले हुए और उनकी मूर्ति 'फुलस' को ध्वस्त कर दिया। बहुत से बंदी और पशुधन अधिकार में किए। प्रसिद्ध दानी 'हातिम ताई' का यह कबीला था और बंदियों में हातिम ताई की पुत्री 'सफ़्फाना' भी शामिल थी। हातिम ताई का पुत्र 'अदी', जो कबीले का सरदार था, वह भाग गया और शाम देश की ओर निकल गया। बंदियों पर अबू क़तादा को निरीक्षक बनाया गया और पशुधन पर अब्दुल्लाह बिन अतीक को निरीक्षक नियुक्त किया गया। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए पंचमांश (पाँचवाँ हिस्सा) निकालकर शेष लूट का माल बाँट लिया गया। किंतु हातिम की पुत्री सफ़्फाना को उन्होंने बाँटा नहीं और गिरफ्तार करके मदीना ले आए।

(अत-तबकातुल कुबरा लिब्ने सअद, जिल्द 2, पृष्ठ 124, दारुल कुतुबिल इल्मिया, प्रथम संस्करण, 1990) (दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 435, बज़्मे इकबाल, लाहौर) (अल-लौलौल मकनून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 418, मकतबा दारुस सलाम)(फरहंगे सीरत, पृष्ठ 64, ज़वार एकेडमी पब्लिकेशन्स, कराची, 2003)

हातिम ताई की पुत्री सफ़्फाना को सभी बंदियों के साथ मस्जिद नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वार के पास एक तंबू में रखा गया। सफ़्फाना बहुत साहसी और चतुर स्त्री थी। जब आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके तंबू के पास से गुज़रे, तो वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्मान के लिए खड़ी हो गई और निवेदन किया: हे अल्लाह के रसूल! मेरे पिता का स्वर्गवास हो चुका है और जो संरक्षक भाई था, वह भाग गया है। अतः मुझ पर कृपा करें, अल्लाह आप पर दया करेगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा: तेरा संरक्षक कौन है? उसने बताया: अदी बिन हातिम ताई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या वही जो अल्लाह और उसके रसूल से भागा हुआ है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह कहकर वहाँ से विदा हो गए। अगले दिन जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वहाँ से गुज़रे, तो सफ़्फाना ने फिर वही कल वाली बात दोहराई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी वही कल वाला उत्तर दिया और तशरीफ ले गए और वह निराश हो गई। तीसरे दिन जब आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके तंबू के पास से गुज़रे, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे-पीछे चल रहे थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सफ़्फाना को इशारा किया कि वह उठकर फिर अपना मंतव्य प्रस्तुत करे। वह तुरंत सम्मान के साथ खड़ी हो गई और अपनी वही प्रार्थना फिर आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में प्रस्तुत की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मैंने तेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली है। तू अब स्वतंत्र है, लेकिन यहाँ से जाने में जल्दबाजी न करना। जब कोई विश्वसनीय व्यक्ति उपलब्ध होगा, तो तुम्हें उसके साथ तुम्हारे भाई के पास शाम भेज दिया जाएगा। एक परंपरा में है कि उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस पर कृपा करें, अर्थात स्वतंत्र कर दें। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस पर कृपा फ़रमाई और उसे मुक्त फरमा दिया। इसका परिणाम

यह हुआ कि वह मुसलमान हो गई। एक परंपरा में यह भी आता है कि वह स्वतंत्रता के तुरंत बाद मुसलमान हो गई थी। कुछ दिनों के बाद बनू 'कुज़ाअह' के कुछ लोग मदीना आए, जो शाम जाने का इरादा रखते थे। सफ़्फाना को उनका पता चला, तो उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में निवेदन किया कि वह उन लोगों पर भरोसा रखती है। इसलिए उसे उनके साथ शाम जाने की अनुमति दी जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे अनुमति प्रदान फ़रमाई और साथ ही उसे वस्त्र और सवारी और रास्ते का खर्च भी उपलब्ध कराया। वहाँ से विदा होकर वह अपने भाई अदी के पास शाम पहुँच गई।

जब वह शाम पहुँची और अपने भाई से मिली, तो उसे फटकार लगाई कि अपनी पत्नी-बच्चों को लेकर वहाँ से भाग आए हो और अपनी बहन और इज्जत को वहीं छोड़ आए हो। यह सुनकर भाई ने क्षमा माँगी और लज्जा प्रकट की। थोड़ी ही देर बाद अदी ने अपनी बहन से पूछा: बताओ तो सही, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विषय में तुम्हारी क्या राय है? सफ़्फाना, जो आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सद्गुण देखकर मुसलमान हो चुकी थी, कहने लगी: अल्लाह की शपथ! मेरा विचार है कि जितनी शीघ्रता हो सके, तुम उनके पास चले जाओ। यदि वह वास्तव में पैगंबर हैं, तो उनकी ओर शीघ्र जाने वाला सफल और कामयाब होगा, और यदि वह बादशाह हैं, तो भी तुम्हारी इज्जत और प्रतिष्ठा में कोई अंतर नहीं पड़ेगा। अदी बोला: यह राय तो बहुत अच्छी है। और फिर वह शीघ्र तैयार होकर मदीना पहुँच गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मस्जिद में विराजमान थे। अदी ने अपना परिचय कराया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें लेकर अपने घर की ओर प्रस्थान हुए। रास्ते में एक बूढ़ी स्त्री ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बातें करने के लिए या प्रश्न पूछने के लिए रोक लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस बूढ़ी स्त्री से बात करने के लिए काफी देर ठहरे रहे। अदी ने यह सब देखकर मन में विचार किया कि यह व्यक्ति बादशाह नहीं हो सकता, जो इस प्रकार बूढ़ी स्त्री के रोकने पर ठहर गया। घर पहुँचकर जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चमड़े का एक गद्दा, जिसमें खजूर की पत्तियाँ भरी हुई थीं, वह उनकी सेवा में बैठने के लिए प्रस्तुत किया, तो अदी ने निवेदन किया कि आप इस पर बैठें, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: नहीं, तुम इस पर बैठो, और स्वयं नीचे ज़मीन पर बैठ गए, जिस पर अदी ने फिर मन में सोचा: अल्लाह की शपथ! यह व्यक्ति बादशाह नहीं हो सकता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे वार्तालाप का आरंभ फ़रमाया। उनके धर्म और निजी मामलों के बारे में भी कुछ बातें बताईं। उनमें से कुछ बातें ऐसी थीं कि अदी के सिवाय किसी को ज्ञात नहीं थीं, जिस पर अदी को विश्वास हो गया कि यह वास्तव में रसूल हैं और निवेदन किया कि मुझे विश्वास हो गया है कि आप वास्तव में अल्लाह के रसूल हैं, क्योंकि आपको कुछ गुप्त बातों से भी अवगत करा दिया गया है।

हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु से परंपरा है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हे अदी! इस्लाम स्वीकार कर लो, तुम सुरक्षित रहोगे। मैंने कहा: मैं पहले से ही एक धर्म का अनुयायी हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मैं तुम्हारे धर्म को तुमसे बेहतर जानता हूँ। मैंने कहा: आप मेरे धर्म को मुझसे अधिक जानते हैं? यह कैसे हो सकता है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हाँ! मैं तुम्हारे धर्म को तुमसे अधिक जानता हूँ। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या तुम 'रकूसी' अर्थात ईसाई धर्म और साबिअ धर्म के बीच का धर्म नहीं रखते? मैंने कहा: क्यों नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या तुम अपनी कौम के सरदार नहीं हो? मैंने कहा: हाँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या तुम सरदार होने के कारण लूट का चौथा हिस्सा नहीं लेते? मैंने कहा: हाँ, लेता हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यह तो तुम्हारे धर्म में भी तुम्हारे लिए वैध नहीं है कि इस प्रकार तुम लो। तो मुझे अपने ऊपर पश्चाताप और लज्जा महसूस हुई। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हे अदी! शायद तुझे इस धर्म में प्रवेश करने से मुसलमानों की निर्धनता रोक रही है। खुदा तआला की शपथ! शीघ्र ही इतना धन बहाया जाएगा कि उसे लेने वाला नहीं मिलेगा और शायद उनके शत्रुओं की बहुलता भी तुझे इस धर्म में प्रवेश करने से रोक रही है। शत्रु बहुत हैं इस्लाम के, इसलिए शायद तुम रुक रहे हो। खुदा तआला की शपथ! तू शीघ्र ही स्त्री के विषय में सुनेगा कि वह अपने ऊँट पर 'हीरह' से प्रस्थान करके इस घर खाना काबा की यात्रा करेगी और उसे कोई भय नहीं होगा और शायद इस धर्म में प्रवेश करने से तुझे यह बात भी रोक रही हो कि शासन और अधिकार दूसरों के पास है, तो खुदा तआला की शपथ! तू शीघ्र ही बाबिल की भूमि के सफेद महलों के विषय में सुनेगा कि वे उनके लिए खोल दिए गए हैं और किसरा के खजाने खोल दिए जाएँगे। यह बात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन बार दोहराई।

अदी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सरल स्वभाव और उन सभी बातों को देखकर मैं मुसलमान हो गया। हज़रत अदी ने इस्लाम स्वीकार करने का वृत्तांत स्वयं बयान किया और वह यह भी कहा करते थे कि मैंने यात्रा करने वाली स्त्री को देखा है कि वह सहयात्री के बिना 'हीरह' से निकलकर बैतुल्लाह का परिक्रमा करने आई और किसरा की विजय के सेना दल में मैं स्वयं शामिल था। इस्लाम स्वीकार करने के बाद हज़रत अदी रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लामी आदेशों का बहुत ध्यान रखा करते थे। नमाज के लिए हर समय वज़ू की हालत में रहते और नमाज के अदा करने के लिए बहुत चिंतित और तत्पर रहते थे।

ये जो लोग बार-बार प्रश्न करते हैं कि महरम रिश्तेदार का हज के लिए जाना आवश्यक है, इसका मैं कई बार उत्तर भी दे चुका हूँ। वह विशेष परिस्थितियों में आवश्यक था, लेकिन यह बात भी इसकी पुष्टि करती है। ये कहते हैं कि मैंने स्वयं देखा है कि एक स्त्री 'हीरह' से निकली है और अकेली थी और काबा की परिक्रमा के लिए आई और कोई उसके साथ नहीं था, कोई महरम वाली शर्त नहीं थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की इस अभियान के कुछ देर बाद 'तय' कबीले का प्रतिनिधिमंडल आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(अल् सीरतुन् नब्विया लिब्ने हिशाम, पृष्ठ 853-854, 'अमर-ए-अदी बिन हातिम', दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 2001) (अस-सीरतुल हल्बिया, जिल्द 3, पृष्ठ 288, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2002) (सहीह बुखारी, किताबुल मनाकिब, बाब 'अलामातिन नुबुव्वति फिल इस्लाम', हदीस 3595) (ग़ज़वा तबूक, लेखक बाशमील, पृष्ठ 46-47, नफीस एकेडमी, कराची) (मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा, अनुवाद, जिल्द 11, पृष्ठ 239-240, मकतबा रहमानिया) (तारीख तिबरी, जिल्द 2, पृष्ठ 187-188, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1987)(दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 442, बज़्मे इकबाल, लाहौर)

फिर सैन्य दल 'उक्काशा बिन मिह्सन' का उल्लेख है, जो 'जिनाब' की ओर था। यह सैन्य दल रबीउस्सानी नौ हिजरी में घटित हुआ। हज़रत उक्काशा का यह सैन्य दल मदीना मुनव्वरा के उत्तर में 'उज़रह' और 'बल्ली' के कबीलों में पेश आया, जो 'जिनाब' के आस-पास रहते थे। कुछ परंपराओं में इस क्षेत्र का नाम 'जिबाब' भी बताया गया है।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 220, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1993) (अत-तबकातुल कुबरा लिब्ने सअद, जिल्द 2, पृष्ठ 124, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, लेबनान, 1990) (शरहुल अल्लामा अज़-ज़रकानी अलाल मवाहिबुल लदुन्निया, जिल्द 4, पृष्ठ 50, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1996)(फरहंगे सीरत, पृष्ठ 197, ज़वार एकेडमी पब्लिकेशन्स, कराची, 2003)

इस सैन्य दल की अधिक विस्तारपूर्वक जानकारी नहीं बयान हुई है। बस इतना ही उल्लेख है कि यह सैन्य दल हुआ था।

(अल् सीरतुन् नबविया, अहमद बिन ज़ैनी दहलान, जिल्द 2, पृष्ठ 123, दारु इहयाइत तुरासिल अरबी, बैरूत)

अब तबूक के युद्ध के बारे में कुछ प्रारंभिक बातें पेश कर देता हूँ। रजब 9 हिजरी, सितंबर 630 ईस्वी में यह हुआ। ताइफ के युद्ध के बाद माह रजब नौ हिजरी में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस युद्ध के लिए रवाना हुए। यह आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवन का अंतिम युद्ध था। तबूक मदीना से लगभग 685 किलोमीटर की दूरी पर था।

(सीरते खातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 842, हज़रत मिर्जा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, एम.ए.)(दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 452, 456, बज़्मे इकबाल, लाहौर)

तबूक नाम के स्रोत पर ठहरने के कारण इस युद्ध को 'युद्ध-ए-तबूक' कहा जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तबूक के निकट पहुँचकर काफिले के सदस्यों से फ़रमाया: 'इन्नकुम सता तूना ग़दन इन शा अल्लाहु ऐने

तबूक'। अर्थात कल तुम तबूक के स्रोत पर पहुँच जाओगे, इन शा अल्लाह।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल फज़ाइल, बाब 'फी मोजिजातिन नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम', रिवायत संख्या 706 (5947), दारुल मअरिफा)

क़ुरआन-ए-करीम में युद्ध-ए-तबूक का उल्लेख 'साअतुल उसरा' अर्थात कठिनाई के समय के नाम से किया गया है। इसलिए इस युद्ध को 'साअतुल उसरा' भी कहा जाता है। (सूरह अत-तौबा: 117)

(सहीहुल बुखारी, अनुवाद, जिल्द 9, पृष्ठ 300, किताबुल मग़ाजी, बाब 'ग़ज़वतुत तबूक व हिया ग़ज़वतुल उसरा', टिप्पणी)(शरहुल अल्लामा अज़-ज़रकानी अलाल मवाहिबुल लदुन्निया, जिल्द 4, पृष्ठ 66, 'सुम्मा ग़ज़वतु तबूक', दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 1996)

चूँकि मुसलमानों को इसमें बहुत कठिनाई और तंगी का सामना करना पड़ा था, जैसे कि तीव्र गर्मी, दूर का सफर, सवारियों की बहुत कमी, रास्ते में पानी की भारी किल्लत थी। सेना की तैयारी के लिए खर्च की भी कमी थी, इसका बहुत अधिक सामना करना पड़ा। इन सभी कठिनाइयों के कारण इसे 'जैशुल उसरा' भी कहा जाता है, अर्थात तंगी और कठिनाई वाली सेना।

(सहीहुल बुखारी, किताबुल मग़ाजी, बाब 'ग़ज़व हि तबूक व हिया ग़ज़वतुल उसरा', हदीस 4415)(अल-लौलौल मकनून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 445, मकतबा दारुस सलाम)

इस युद्ध को 'ग़ज़वतुल फाज़िहा' भी कहते हैं। अरबी में 'फज़ाहत' बदनामी और पर्दाफाश को कहते हैं और चूँकि इसकी वजह से बहुत से कपटाचारियों का हाल खुलकर सामने आ गया, जो उनकी और अधिक बदनामी और पर्दाफाश का कारण बना, इसलिए इसे यह नाम दिया गया।

(अस-सीरतुल हल्बिया, जिल्द 3, पृष्ठ 183, 'ग़ज़वा तबूक', दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2002)(दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 454, बज़्मे इकबाल, लाहौर)

युद्ध-ए-तबूक के कारण और पृष्ठभूमि क्या थे? वैसे तो मदीना वालों को बाहरी शक्तियों, विशेषकर रोमवासियों द्वारा समर्थित 'बनू ग़स्सान' के आक्रमण का हर समय खतरा रहता था और ऐसी सूचनाएँ भी थीं कि ये दोनों, अर्थात रोमवासी और ग़स्सानी, किसी युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। ग़स्सानी आक्रमण के खतरे और भय के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं वर्णन फ़रमाते हैं कि हमें हर समय ग़स्सानियों के आक्रमण का डर रहता था, अर्थात हर समय यह आशंका और ख्याल होता था कि अब आक्रमण हुआ कि अब हुआ।

(अस-सीरतुल हल्बिया, जिल्द 3, पृष्ठ 357, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2002)
(सहीहुल बुखारी, किताबुत तफसीर, हदीस 4913, अनुवाद, जिल्द 12, पृष्ठ 266)

तबूक के युद्ध का तात्कालिक कारण जो हुआ, वह एक परंपरा में इस प्रकार है कि व्यापारियों के एक समूह ने, जो मदीना में शाम से जैतून का तेल लाए थे, मुसलमानों को बताया कि रोमवासियों ने शाम में एक बहुत बड़ी सेना एकत्र की है और 'हिरकल' ने उन सैनिकों या सहयोगियों को एक साल का खर्च उपलब्ध कराया है। इनके साथ 'लख्म', 'जुज़ाम', 'आमिला', 'ग़स्सान' और अन्य ईसाई कबीले मिल गए हैं और उनका अग्रिम दस्ता 'बल्का' तक पहुँच चुका है। 'बल्का' शाम देश में स्थित एक क्षेत्र है, जो दमिश्क और 'वादिल क़ुरा' के बीच है।

(मोजमुल बुलदान, जिल्द 1, पृष्ठ 579-580, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत)
(सीरतुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, डॉ. अली मुहम्मद सल्लाबी, जिल्द 3, पृष्ठ 528, मकतबा दारुस सलाम) (सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, जिल्द 5, पृष्ठ 433, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1993)

इस युद्ध का दूसरा कारण यह भी हुआ, जिसका उल्लेख एक परंपरा में मिलता है कि अरब के ईसाइयों ने 'हिरकल' की ओर लिखा कि जिस व्यक्ति ने पैगंबरी का दावा किया है, अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, वह मारा गया है (खुदा तआला की पनाह) और उसके साथियों को अकाल ने आ घेरा है और उनके धन-पशु नष्ट हो गए हैं और अब उन पर आक्रमण करने और ईसाई धर्म को प्रभावी करने का अत्यंत अनुकूल अवसर है। अतः उसने अपने सैन्य जनरल को चालीस हज़ार की सेना के साथ रवाना किया। इस जनरल का नाम 'कबाज़' या 'ज़न्नाद' था। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब इस सेना की सूचना मिली, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी सेना तैयार करने का आदेश दिया।

(शरहुल अल्लामा अज़-ज़रकानी अलाल मवाहिबुल लदुन्निया, जिल्द 4, पृष्ठ 68, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 1996)(अस-सीरतुल हल्बिया, जिल्द 3, पृष्ठ 183, दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2002) (अल-लौलौल मकनून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 447-448, मकतबा दारुस सलाम)

मूल कारण यही प्रतीत होता है कि मक्का की विजय के बाद और हुनैन के युद्ध में बनू हवाजिन जैसे अत्यंत शक्तिशाली कबीले को भी चेतावनीपूर्ण पराजय देने के बाद और अरब के आस-पास के सभी कबीलों पर मुसलमानों को प्रभुत्व मिलने के बाद, यहूदी और ईसाई और कपटाचारी एक बार फिर सिर जोड़कर बैठे और अपनी हर कोशिश को विफल होते देखकर उस समय की महाशक्ति अर्थात रोम के सम्राट से सहायता माँगने का निर्णय किया और इसके लिए उन्होंने एक बहुत बड़ी और बहुत ही खतरनाक योजना बनाई।

एक ओर रोम के सम्राट से संपर्क किया और उसे तैयार किया कि वह अपनी सेना भेजे ताकि मुसलमानों का सफाया किया जाए, और दूसरी ओर कपटाचारियों ने यह किया कि मदीना में पहले से ही यह अफवाहें उड़ाना आरंभ कर दीं कि रोम का सम्राट अपनी सेना भेज रहा है, जो मदीना में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समेत सभी मुसलमानों का सफाया कर देगी। इस प्रकार से कपटाचारी और दूसरे विरोधी यह चाहते थे कि अधिक संभावना है कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वयं ही सेना का मुकाबला करने के लिए मदीना से शाम की ओर निकल जाएँ और दोनों स्थितियों में सफर की कठिनाइयाँ या रोम के सम्राट से मुकाबला मुसलमानों और आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की (खुदा तआला की पनाह) मृत्यु को निश्चित बना देगा।

बहरहाल, यह उनकी इच्छा थी। इसकी अब और लंबी विस्तारपूर्वक जानकारी है, जो इन शा अल्लाह आगे बयान करूँगा।

आज रबवा में मस्जिद महदी, जो गोलबाजार में है, उस पर आतंकवादियों ने आक्रमण भी किया और हमारे पाँच-छह लोग वहाँ घायल हैं। दो बहुत अधिक घायल हैं। उनका ऑपरेशन आदि भी हो रहा था। अल्लाह करे कि उनकी स्थिति बेहतर हो गई हो। शेष कुछ घायल भी हैं, अल्लाह तआला उन पर भी अनुग्रह करे और जो दो गंभीर रूप से घायल हैं, उनके पेट में गोलियाँ लगी हैं। एक आतंकवादी को भी हमारे सुरक्षा कर्मियों ने मारा है, मार डाला है। एक भाग गया है। यही अब तक की रिपोर्ट है। शेष विवरण अभी आएँगी।

अल्लाह तआला उन आतंकवादियों और कानून तोड़ने वालों और जमात के विरोधियों को शीघ्र पकड़े।

पंजाब की सरकार और मुख्यमंत्री यह दावा कर रहे हैं कि पंजाब में सौ प्रतिशत अपराध नियंत्रित हो चुके हैं और अब कोई अपराधी नहीं रहा, लेकिन अहमदियों पर जो आए दिन आक्रमण होते हैं, हत्या, शहीद किए जा रहे हैं या घायल किए जा रहे हैं या उनकी संपत्ति को आग लगाई जा रही है, उसे शायद ये अपराध नहीं मानते।

अल्लाह तआला उन सरकारों को भी बुद्धि दे और शीघ्र ही अल्लाह तआला जमात के पक्ष में निशान प्रकट फ़रमाए।

(अल-फज़ल इंटरनैशनल, 31 अक्टूबर 2025, पृष्ठ 2 से 7)

पर्दा न करने (बे-पर्दगी) का बढ़ता हुआ रुझान

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानीरज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"जब दूल्हा आए और चाहे वह पराया ही क्यों न हो, मोहल्ले की औरतें उससे पर्दा करना आवश्यक नहीं समझतीं और कहती हैं इससे क्या पर्दा है और फिर केवल यही नहीं कि पर्दा नहीं करतीं बल्कि उससे मजाक और हँसी भी करती हैं। कुल मिलाकर बहुत सी इस प्रकार की बातें हैं कि विवाह के मामले में धार्मिक नियम (शरीअत) का उल्लंघन किया जाता है, हालाँकि यही ऐसा मामला है कि इसके संबंध में बहुत अधिक सावधानी के साथ धार्मिक नियमों का पालन करना चाहिए था।"

(खुत्बाते महमूद भाग तीसरा पृष्ठ 71)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह त्आला फ़रमाते हैं:

"जो बुराइयाँ मार्ग पकड़ रही हैं उनमें से एक पर्दा न करने का सामान्य रुझान भी है जो निश्चित रूप से धार्मिक नियमों (अहकामे शरीअत) की सीमाएँ लाँघने के निकट हो चुका है और विवाह वालों की इस मामले में उदासीनता को भी प्रकट करता है क्योंकि सम्मानित अतिथियों में बहुत सी लज्जाशील पर्दा करने वाली महिलाएँ होती हैं। बेधड़क अंतरंग (इंटर--सेंट) फोटोग्राफरों या गैर जिम्मेदार और गैर संबंधी पुरुषों को बुलाकर तस्वीरें खिंचवाना और यह परवाह न करना कि यह मामला केवल परिवार के निकटतम घेरे तक ही सीमित है, इस बारे में स्पष्ट रूप से बार-बार समझाना चाहिए कि आपने यदि घर के भीतर कोई वीडियो आदि बनानी है तो पहले अतिथियों को सूचित कर दिया जाए और केवल सीमित पारिवारिक दायरे में ही शौक पूरे किए जाएँ।"

(दैनिक अल-फज़ल रबवा 26 जून 2002, पृष्ठ संख्या 4)

(विभाग: रिश्ता नाता नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया कादियान)

ख़ुदा तआला कौन है और क्या है? बिग बैंग से कायनात का आग़ाज़ हुआ और उस वक़्त से कायनात ख़ुद-ब-ख़ुद चल रही है तो क्या पूरी कायनात ही ख़ुदा है?

रूह की हक़ीक़त और उसके जन्नत में सफ़र करने के बारे में रहनुमाई

रोज़े के दौरान दवाओं के इस्तेमाल के बारे में रहनुमाई

मस्जिद में प्लास्टिक की टोपियाँ रखने के बारे में रहनुमाई

क्या दर्स के मध्य में सुन्नतें अदा की जा सकती हैं?

जमाअत अहमदिया शरीयत के तौर पर कितने कलमों पर यकीन रखती है?

मोमिन औरतों के लिए जन्नत में क्या है? साथ ही क्या औरत सिर्फ मर्द के लिए ही पैदा की गई है?

अमानतन दफनाए गए शख्स की लाश को जब बिहिशती कब्रिस्तान में शिफ्ट किया जाता है तो उसकी दोबारा नमाज़-ए-जनाज़ा क्यों पढ़ी जाती है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 53-54)

... सूरह अस-सज्दा की उपर्युक्त आयत की व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "कोई भी अच्छा कर्म करने वाला यह नहीं जानता कि उसके लिए छिपाई हुई कौन-कौन सी नेमतें हैं। इसलिए अल्लाह ने उन सभी नेमतों को गुप्त बताया है जिनका दुनिया की नेमतों में कोई नमूना नहीं है। यह तो स्पष्ट है कि दुनिया की नेमतें हम पर गुप्त नहीं हैं और दूध, अनार और अंगूर आदि को हम जानते हैं और हमेशा ये चीज़ें खाते हैं। सो इससे ज्ञात हुआ कि वे चीज़ें और हैं और उनका इन चीज़ों से केवल नाम का ही साझा है। इसलिए जिसने स्वर्ग को दुनिया की चीज़ों का समूह समझा, उसने कुरआन शरीफ का एक अक्षर भी नहीं समझा।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलसफी, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 10, पृष्ठ 397-398)

इन नेमतों को छिपाने की हिकमत बताते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "अल्लाह के छिपाने में भी एक महानता होती है... वास्तव में छिपाने में भी एक प्रकार का सम्मान होता है, जैसे खाना लाया जाता है तो उस पर मेज़पोश आदि होता है, तो यह एक सम्मान का चिह्न होता है।"

(अल् बदर, अंक 11, खंड 1, दिनांक 9 जनवरी 1903, पृष्ठ 86)

स्वर्ग की हूरों का मामला भी प्रतीकात्मक भाषा पर आधारित है। क़ुरआन-ए-करीम ने चार स्थानों पर हूरों का उल्लेख फ़रमाया है। पहले दो स्थानों

(सूरह अद-दुखान और सूरह अत-तूर) पर फ़रमाया: "और हम उनका विवाह बड़ी-बड़ी सुंदर आँखों वाली हूरों से करा देंगे", और बाकी दो स्थानों (सूरह अर-रहमान और सूरह अल-वाक़िआ) पर उन हूरों के गुण बताए गए हैं कि वह तंबूओं में सुरक्षित, याकूत और मोती की तरह होंगी। अर्थात वे लज्जा और शर्म से भरी हुई, नेक, पवित्र, सुंदर और अच्छे चरित्र वाली होंगी।

शब्द 'ज़ौज' के अर्थ 'जोड़ा' के होते हैं। इससे केवल पति या पुरुष का अर्थ लेना सही नहीं है, बल्कि इसका मतलब नेक और पवित्र साथी या जोड़ा है। इस दृष्टि से इन आयतों का अर्थ यह होगा कि हम स्वर्ग में नेक स्त्रियों को पवित्र पुरुषों का और नेक पुरुषों को पवित्र स्त्रियों का साथी बना देंगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अल-बकरा की आयत "और उनके लिए वहाँ पवित्र जोड़े होंगे" की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि इसके अर्थ पवित्र साथी, या पवित्र पत्नियाँ, या पवित्र पति हो सकते हैं। पवित्र साथी के अर्थ की स्थिति में तो किसी के लिए आपत्ति करने का कोई स्थान ही नहीं है, क्योंकि इस स्थिति में इसके यह अर्थ होंगे कि स्वर्ग में जिस प्रकार भोजन एक-दूसरे के लिए सहायक होगा, उसी प्रकार उसके सभी निवासी एक-दूसरे की आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होंगे, मानो आंतरिक और बाहरी, हर प्रकार का शांति और सहयोग प्राप्त होगा।

और यदि पति या पत्नी के अर्थ किए जाएँ, क्योंकि 'अज़वाज' पुरुष और स्त्री दोनों के लिए बोला जाता है (स्त्री का 'ज़ौज' उसका पति है और पुरुष का 'ज़ौज' उसकी पत्नी), तो इस स्थिति में इसका एक अर्थ यह होगा कि हर स्वर्गवासी के पास उसका वह जोड़ा रखा जाएगा जो नेक होगा। इस स्थिति में भी इस पर कोई आपत्ति नहीं की जा सकती, बल्कि यह तो एक प्रेरणा है कि पुरुष को अपनी नेकी के साथ-साथ अपनी पत्नी की नेकी का भी ध्यान रखना चाहिए और स्त्री को अपनी नेकी के साथ-साथ अपने पति की नेकी का भी ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि यदि वे सांसारिक जीवन की तरह परलोक में भी साथ रहना चाहते हैं, तो चाहिए कि उनमें से हर एक दूसरे को भी नेक बनाने का प्रयास करे। ताकि ऐसा न हो कि पति स्वर्ग में हो और पत्नी नरक में, या पत्नी स्वर्ग में हो और पति नरक में। इन अर्थों के अनुसार, यह आध्यात्मिक पवित्रता की एक उत्कृष्ट शिक्षा है, जिस पर आपत्ति करने के बजाय उसकी प्रशंसा करनी चाहिए।

बाकी रहा यह कि इसके अर्थ यह भी हो सकते हैं कि हर व्यक्ति को एक पवित्र जोड़ा दिया जाएगा, तो इन अर्थों के अनुसार भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती। क्योंकि यदि यही अर्थ हों कि हर पुरुष को एक पवित्र पत्नी दी जाएगी और हर स्त्री को एक पवित्र पति दिया जाएगा, तो इस पर क्या आपत्ति है? आपत्ति तो उसी स्थिति में हो सकती है जब किसी अशुद्ध कर्म की ओर संकेत किया जाए। जब कुरआन शरीफ 'पाक' शब्द का प्रयोग करता है, तो स्पष्ट है कि स्वर्ग में वही कुछ होगा जो स्वर्ग के लिहाज से पवित्र है, फिर इस पर आपत्ति कैसी?

(तफ़सीर-ए-कबीर, खंड 1, पृष्ठ 252-253)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह-सालिस रहमहुल्लाह सूरह अद-दुखान की आयत "और हम उनका विवाह बड़ी-बड़ी सुंदर आँखों वाली हूरों से करा देंगे" की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि हम उनकी पत्नियों को हूर बना देंगे और उनका विवाह संबंध स्थापित करेंगे। फिर अगली आयत में फ़रमाया कि हम उनके साथ स्वर्ग में उनकी संतान को भी इकट्ठा कर देंगे। यहाँ पत्नी का उल्लेख इसलिए छोड़ दिया गया क्योंकि वह पिछली आयत में आ चुका है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक बूढ़ी महिला से कहा कि स्वर्ग में कोई बूढ़ी नहीं जाएगी। तो वह रोने लगी कि हे अल्लाह के रसूल, तो फिर मैं कहाँ जाऊँगी? तो आपने फ़रमाया: "मैंने यह तो नहीं कहा कि तुम नहीं जाओगी, मैंने यह कहा है कि स्वर्ग में कोई बूढ़ी नहीं जाएगी। तुम जवान होने की स्थिति में वहाँ जाओगी।" तो जब बूढ़ी वहाँ जवान होने की स्थिति में जाएगी, तो बदसूरत वहाँ सुंदर स्थिति में जाएगी। जो लंगड़ी-लूले यहाँ से जाएगी, वह स्वस्थ अंगों, पूर्ण विकास के साथ जाएगी। इसलिए "हम उनका विवाह बड़ी-बड़ी सुंदर आँखों वाली हूरों से करा देंगे" का अर्थ है कि उनका विवाह संबंध बूढ़ी से नहीं, बल्कि हूर से जोड़ा जाएगा, जो जवान भी होगी, सुंदर भी होगी और नेक भी होगी।

(संक्षिप्त, जुमे का खुत्बा, दिनांक 19 फ़रवरी 1982, खुतबात-ए-नासिर, खंड 9, पृष्ठ 386-387)

इस प्रकार उपर्युक्त संदर्भों से सिद्ध होता है कि हूरों से अभिप्राय नेक और पवित्र जोड़े हैं, जो स्वर्ग में ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों के साथ विवाह संबंध में बंधे होंगे और उन्हें पुरस्कार के रूप में मिलेंगे। इन जोड़ों की क्या स्थिति होगी? इसका ज्ञान केवल अल्लाह ही बेहतर जानता है। मनुष्य को इसका ज्ञान तभी होगा जब वह स्वर्ग में जाएगा।

उपर्युक्त व्याख्या से आपके दूसरे प्रश्न का भी उत्तर मिल जाता है कि क्या स्त्री केवल पुरुष के लिए पैदा की गई है? क्योंकि इस्लाम के अनुसार, पुरुष और स्त्री

दोनों एक-दूसरे के लिए पैदा किए गए हैं। और बुद्धिमान पति-पत्नी इस सच्चाई को समझकर इस दुनिया को भी अपने लिए स्वर्ग बना लेते हैं और स्वर्ग में भी एक-दूसरे की आध्यात्मिक उन्नति में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रश्न: अमेरिका से एक महिला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछा कि जब अस्थायी रूप से दफनाए गए व्यक्ति के शव को 'बिहिश्ती कब्रिस्तान' में स्थानांतरित किया जाता है, तो उसकी दोबारा नमाज़ ए जनाज़ाक्यों पढ़ी जाती है, जबकि उसकी मृत्यु को कई वर्ष बीत चुके होते हैं? हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 12 अप्रैल 2022 के अपने पत्र में इस प्रश्न के बारे में निम्नलिखित आदेश दिए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

उत्तर: नमाज़ ए जनाज़ा एक दुआ है जो मृतक की क्षमा और पदोन्नति के लिए पढ़ी जाती है। और स्वर्ग में तो असीम स्तर हैं। इसीलिए नमाज़ ए जनाज़ाके बाद भी लोग मृतकों के लिए दुआएँ करते रहते हैं और जब उनकी कब्रों पर जाते हैं, तो वहाँ भी उन मृतकों की पदोन्नति के लिए दुआ करते हैं। और ये सभी बातें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की परंपरा से सिद्ध होती हैं। हदीस में आता है कि एक व्यक्ति जो मस्जिद की सफ़ाई का काम करता था, एक रात मर गया और लोगों ने उसे दफन कर दिया। अगले दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस व्यक्ति के बारे में पूछा, तो आपको बताया गया कि वह मर गया है। तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुमने मुझे सूचना क्यों नहीं दी? फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस व्यक्ति की कब्र पर गए और वहाँ उसकी नमाज़ ए जनाज़ाअदा की। (सहीह बुखारी, किताबुस्सलात) इसी तरह हज़रत उकबा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर आए और उहुद के शहीदों के लिए उस तरह दुआ की जिस तरह मृतक के लिए दुआ की जाती है।

(सहीह बुखारी, किताबुल जनाइज़)

रह गई बात कि किसी अस्थायी रूप से दफन हुए व्यक्ति के शव के स्थानांतरण पर दोबारा नमाज़ ए जनाज़ापढ़ना आवश्यक नहीं है, लेकिन यदि पढ़ ली जाए तो इसमें कोई हानि की बात भी नहीं है। हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु की मृत्यु पर उन्हें 11 अक्टूबर 1905 को अस्थायी रूप से दफनाया गया था, क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा थी कि 'बिहिश्ती कब्रिस्तान' के स्थापित होने पर उनके शव को वहाँ स्थानांतरित किया जाए। इसलिए 26 दिसंबर 1905 को हज़रत मौलवी साहिब के शव को 'बिहिश्ती कब्रिस्तान' में स्थानांतरित करते समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी दोबारा नमाज़ ए जनाज़ा अदा की।

(अल्-हकम, अंक 36, खंड 9, दिनांक 17 अक्टूबर 1905, पृष्ठ 1; और
अल्-हकम, अंक 1, खंड 10, दिनांक 10 जनवरी 1906, पृष्ठ 6)

इस प्रकार, यही हमारा तरीका है कि शव के स्थानांतरण पर कभी-कभी हम दोबारा नमाज़ ए जनाज़ापढ़ लेते हैं और कभी-कभी नई कब्र तैयार होने पर केवल दुआ कर ली जाती है। दोनों तरीके सही हैं।

★ ★ ★

130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 130वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयारी आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इसे हर प्रकार से सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए जमाअत के सभी मित्र दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

और इस आदेश में एक रहस्य भी है और वह यह है कि इस आयत से एक बुद्धिमान समझ सकता है कि जब आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित करके कहा गया है कि तू अपने माता-पिता का आदर कर और हर एक बोल-चाल में उनके बुज़ुर्गों जैसे पद का ध्यान रख, तो फिर दूसरों को अपने माता-पिता की कितनी अधिक श्रद्धा करनी चाहिए और इसी की ओर यह दूसरी आयत संकेत करती है। 'व कज़ा रब्बुका अल्ला तअबुदू इल्ला इय्याहु व बिल वालिदैन इहसाना' अर्थात तेरे रब ने चाहा है कि तू केवल उसी की उपासना कर और माता-पिता के साथ भलाई कर। इस आयत में मूर्तिपूजकों को, जो मूर्ति की पूजा करते हैं, समझाया गया है कि मूर्ति कुछ भी नहीं हैं और मूर्तियों का तुम पर कोई उपकार नहीं है। उन्होंने तुम्हें पैदा नहीं किया और तुम्हारे बाल्यकाल में वे तुम्हारे उत्तरदायी नहीं थे और यदि खुदा तआला उचित समझता कि उसके साथ किसी और की भी पूजा की जाए तो यह आदेश देता कि तुम माता-पिता की भी पूजा करो, क्योंकि वे भी प्रतीकात्मक पालनहार हैं और हर एक व्यक्ति स्वभावतः, यहाँ तक कि हिंसक पशु-पक्षी भी, अपनी संतान को उनके बाल्यकाल में नष्ट होने से बचाते हैं। अतः खुदा तआला की पालनहार की विशेषता के बाद उनकी भी एक पालनहार की विशेषता है और वह पालनहारी के जोश का भी खुदा तआला की ओर से है।)

(हक़ीकतुल वह्यी, पृष्ठ संख्या 204 से 205)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमाअत की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाअती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफ़त के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछताछ फ़रमाई कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा है कि नहीं?

तो उन्होंने निवेदन किया कि घर वालों के लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को छोड़ आया हूँ।

तबूक के अभियान के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तंगी और कठोरता के बावजूद यह निश्चय किया कि रोमवासियों को आगे बढ़ने की मोहलत दिए बिना स्वयं उनके क्षेत्र में जाकर उनके विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध लड़ा जाए।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आम तौर पर युद्ध के अभियानों को कुछ गुप्त रखा करते थे, लेकिन ख़ैबर के अभियान के बाद तबूक का अभियान ऐसा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सामान्य घोषणा फ़रमाई।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस अवसर पर दस हज़ार दीनार दान किए, तो आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए यह प्रार्थना की:

غَفَرَ اللّٰهُ لَكَ يَا عُثْمَانُ مَا اَسْرَرْتَ وَمَا اَعْلَنْتَ وَمَا هُوَ كَائِنٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا يُبَالِيْ مَا عَمِلَ بَعْدَهَا

'ग़फ़रल्लाहु लका या उस्मानु मा असररता व मा अलनता व मा हुवा काइनुन इला यौमिल क़ियामति मा युबाली मा अमिला बअदहा'।

अर्थात हे उस्मान! अल्लाह तुझसे क्षमा का व्यवहार फ़रमाए, जो तूने गुप्त रूप से किया और जो तूने खुलेआम किया और जो क़ियामत तक होने वाला है।

इसके बाद वह जो भी कर्म करे, उसे कोई चिंता नहीं होनी चाहिए।

अल्लाह तआला का बड़ा अनुग्रह है कि जमात अहमदिया के सदस्य इस बात को समझते हैं कि आर्थिक त्याग की क्या महत्ता है...

धनी लोगों को भी, संपन्न लोगों को भी हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के उदाहरण सामने रखने चाहिएँ और फिर अपने त्याग के स्तर को बढ़ाना चाहिए।

रबवा में मस्जिद महदी पर आतंकवादी हमले के घायलों के लिए प्रार्थनाओं का आह्वान

अल्लाह तआला उन सभी को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे और भविष्य में हर बुराई से, हर क्षति से हर स्थान पर जमात के सदस्यों को बचाए।

युद्ध-ए-तबूक के संदर्भ में पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र सीरत का पावन वर्णन

श्रीमान साम अली नीना साहिब, मार्शल आईलैंड्स का सदस्य, का सद्गति उल्लेख और अनुपस्थित नमाजे जनाज़ा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 अक्टूबर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जैसा कि पिछले खुत्बे में युद्ध-ए-तबूक के बारे में संक्षिप्त उल्लेख हुआ था, उसकी कुछ और विस्तारपूर्वक जानकारी आज बयान करूँगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाहु तआला अनहु इस युद्ध अर्थात युद्ध-ए-तबूक की पृष्ठभूमि बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि "जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का फतह किया, तो 'अबू आमिर मदनी', जो 'खज़रज' कबीले में से था और यहूदियों और ईसाइयों से मेल-जोल की वजह से जाप-स्मरण करने का आदी था और इसकी वजह से लोग उसे 'राहिब' कहते थे, मगर धर्मतः ईसाई नहीं था। यह व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मदीना में पहुँच जाने के बाद मक्का की ओर भाग गया था। जब मक्का भी फतह हो गया, तो यह सोचने लगा कि अब मुझे इस्लाम के विरुद्ध उपद्रव पैदा करने के लिए कोई और युक्ति करनी चाहिए। आखिर उसने अपना नाम और ढंग बदला और मदीना के पास 'क़ुबा' नामक गाँव में जाकर रहना आरंभ किया। वर्षों बाहर रहने की वजह से और कुछ रूप-रंग और पहनावे में परिवर्तन कर लेने की वजह से मदीना के लोगों ने सामान्य रूप से उसे नहीं पहचाना। केवल वही कपटाचारी इसे जानते थे, जिनके साथ इसने अपना संबंध स्थापित कर लिया था। इसने मदीना के कपटाचारियों के साथ मिलकर यह सुझाव दिया कि मैं शाम में जाकर ईसाई सरकार और अरबी ईसाई कबीलों को भड़काता हूँ और उन्हें मदीना पर आक्रमण करने की प्रेरणा देता हूँ। इधर तुम यह प्रचार करना आरंभ कर दो कि शामी फौजें मदीना पर आक्रमण कर रही हैं।" (जो मदीना में कपटाचारी हैं, वे यह प्रचार आरंभ कर दें।) "अगर मेरी योजना सफल हो गई, तो फिर भी इन दोनों की भिड़ंत हो जाएगी" (आपस में युद्ध हो जाएगा), "और अगर मेरी योजना सफल न हुई, तो उन अफवाहों की वजह से मुसलमान शायद शाम पर जाकर स्वयं आक्रमण कर दें और इस तरह सम्राट की सरकार और उनमें लड़ाई आरंभ हो जाएगी और हमारा काम बन जाएगा।" इस उपद्रवी ने यह कहा कि दोनों स्थितियों में हमें लाभ है। "अतः यह प्रेरणा देकर यह व्यक्ति शाम की ओर गया और मदीना के कपटाचारियों ने रोज़ाना मदीना में यह समाचार प्रचलित करने आरंभ कर दिए कि फलाँ काफिला हमें मिला था और उसने बताया था कि शामी सेना मदीना पर आक्रमण करने की तैयारी कर रही है। दूसरे दिन फिर कह देते थे कि फलाँ काफिले के लोग हमें मिले थे और उन्होंने कहा था कि मदीना पर शामी सेना चढ़ाई करने वाली है। यह समाचार इतनी तीव्रता से फैलने लगीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उचित समझा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस्लामी सेना लेकर स्वयं शामी सेनाओं के मुकाबले के लिए जाएँ। यह समय मुसलमानों के लिए अत्यंत ही कष्ट का था। अकाल का साल था। पिछले मौसम में अनाज और फल कम पैदा हुआ था और इस मौसम की फसल अभी पैदा नहीं हुई थीं।" (फसल अभी कटी नहीं थी।) "सितंबर का अंत या अक्टूबर का आरंभ था, जब आप इस अभियान के लिए रवाना हुए। कपटाचारी तो जानते थे कि यह सब उपद्रव है और यह कि उन्होंने यह सब चालाकी इसलिए की है कि अगर शामी सेना आक्रमण करने वाली न हुई, तो मुसलमान स्वयं शामवासियों से जा लड़ें और इस तरह नष्ट हो जाएँ। 'मौता' के युद्ध की परिस्थितियाँ उनके सामने थीं। उस समय मुसलमानों को इतनी बड़ी सेना का सामना करना पड़ा था कि वे बहुत कुछ क्षति उठाकर मुश्किल से बचे थे। अब वे एक दूसरी 'मौता' अपनी आँखों से देखना चाहते थे, जिसमें स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी (खुदा तआला की पनाह) शहीद हो जाएँ। इसलिए एक ओर तो कपटाचारी रोज़ाना यह समाचार फैलाते थे कि फलाँ स्रोत से हमें मालूम हुआ

है कि शत्रु आक्रमण करने वाला है, फलाँ स्रोत से मालूम हुआ है कि शामी फौजें आ रही हैं, और दूसरी ओर लोगों को डराते थे कि इतनी बड़ी सेना का मुकाबला आसान नहीं। तुम्हें युद्ध के लिए नहीं जाना चाहिए। इन कार्रवाइयों से उनका उद्देश्य यह था कि मुसलमान शाम पर आक्रमण करने के लिए जाएँ तो सही, लेकिन जहाँ तक हो सके, कम से कम संख्या में जाएँ, ताकि उनकी पराजय अधिक से अधिक निश्चित हो जाए।"

(दीबाचा तफसीरुल कुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 359-360) (कम होंगे तो पराजय निश्चित हो जाएगी।)

बहरहाल, आने वाली सूचनाओं के आधार पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम परिस्थितियों और घटनाओं का अवलोकन लेकर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रोमवासियों से मुकाबला करने में देरी की या उन्हें मुसलमानों के प्रभाव वाले क्षेत्रों में प्रवेश का अवसर दिया, तो इसके नुकसान अधिक होंगे, इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तंगी और कठोरता के बावजूद यह निश्चय किया कि रोमवासियों को आगे बढ़ने की मोहलत दिए बिना स्वयं उनके क्षेत्र में जाकर उनके विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध लड़ा जाए।

(उद्धृत: खातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, मुहम्मद अबू ज़ुहरा, जिल्द 3, पृष्ठ 951-952, दारुल फिक्रिल अरबी, 2012)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसे एक और स्थान पर इस प्रकार बयान फ़रमाया है कि "रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह अफवाहें पहुँचीं, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह आदेश दिया कि इसके बजाय कि रोमवासी हम पर चढ़ आएँ और आक्रमण कर दें, हमें चाहिए कि सीमा पर ही जाकर उन्हें रोकें। आपने मुसलमानों को तैयारी का आदेश दिया।"

(खुतबाते महमूद, जिल्द 22, पृष्ठ 135, जुमे का खुत्बा, 14 मार्च 1941)

पहला एक हवाला मैंने इतिहास की एक पुस्तक से दिया था। यह इतना सा भाग हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का है। बहरहाल, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आम तौर पर युद्ध के अभियानों को कुछ गुप्त रखा करते थे, लेकिन ख़ैबर के अभियान के बाद तबूक का अभियान ऐसा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सामान्य घोषणा फ़रमाई और रास्ते की कठिनाइयों और शत्रु की बहुलता का पहले से बताते हुए तैयारी करने की सीख फ़रमाई।

(सहीह बुखारी, किताबुल जिहाद वस सीर, बाब 'मन इरादा ग़ज़वतन फव्वरा बि-ग़ैरिहा', हदीस 2948, अनुवाद, जिल्द 5, पृष्ठ 303)

यह परंपरा बुखारी में आई है। साथ ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का और दूसरे अरब कबीलों में व्यक्ति भेजे कि वे लोग सेना में सम्मिलित हों। दूसरी ओर, आपने दानशील लोगों को आग्रह फ़रमाया कि वे अल्लाह के मार्ग में अपना धन व्यय करें।

(अस-सीरतुल हल्बिया, जिल्द 3, पृष्ठ 183, 'ग़ज़वा तबूक', दारुल कुतुबिल इल्मिया, 2002)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विभिन्न कबीलों को युद्ध में सम्मिलित होने का संदेश भी भेजा और उनकी ओर अपने दूत भेजे, जैसा कि उल्लेख हुआ है। अतः हज़रत बुरैदा बिन हुसैब को कबीला 'बनू अस्लम' की ओर, हज़रत अबू रुहम ग़िफारी को अपनी कौम 'बनू ग़िफ़ार' की ओर, हज़रत अबू वाकिद लैसी को अपनी कौम 'लैस' की ओर, हज़रत अबू जअद ज़मरी को उनकी कौम की ओर भेजा। हज़रत राफे बिन मकीस को 'जुहैना' की ओर भेजा। इसी प्रकार हज़रत नुऐम बिन मसऊद को 'अशजअ' और 'बदील बिन वरक़ा', 'अम्र बिन सालिम' और 'बुस्र बिन सुफ्यान' को 'बनू कअब बिन अम्र' की ओर भेजा और इसी प्रकार 'अब्बास बिन मिरदास' को 'बनू सुलैम' की ओर रवाना किया।

(उद्धृत: इमताउल अस्माअ, जिल्द 2, पृष्ठ 47, 'ग़ज़वा तबूक', 'अल-ख़बर अनिल ग़ज़व वल बअसा इलल कबाइल', दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत, 1999)(दाइरा मआरिफ सीरते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 465, प्रकाशक: बज़्मे इकबाल, लाहौर)

मदीना में उस समय एक सख्त भय और आतंक का वातावरण था और इसका कारण यह था कि शक्तिशाली शत्रु किसी भी समय आक्रमण कर सकता है। अतः बुखारी की एक परंपरा के अनुसार, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हम आपस में बातें किया करते थे कि एक 'ग़स्सानी' बादशाह ने हमारे साथ युद्ध के लिए अपने घोड़ों की नाल बिठवा ली हैं, अर्थात पूरी तैयारी कर ली है, और बुखारी की ही एक परंपरा में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हम एक 'ग़स्सानी' बादशाह से भयभीत थे। हमें बताया गया कि वह हम पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है। इस वातावरण में हमारे सीने भय से भर गए थे।

(सहीह बुखारी, किताबुल मज़ालिम वल ग़स्ब, बाब 'अल-ग़ुरफति वल-उल्लिय्यतिल मुशरिफ़ति व ग़ैरिल मुशरिफ़ति फिस सुतूहि व ग़ैरिहा', हदीस संख्या 2468; किताबुत तफसीर, बाब 'तब्तगी मरज़ाता अज़्वाजिक', हदीस संख्या 4913)

बहरहाल इसके बावजूद सहाबा की तैयारी और आर्थिक त्याग का विश्वास-प्रज्वलित दृश्य भी देखने में आया। इसके विवरण में लिखा है कि इस भय और आतंक के साथ-साथ मदीना को उस समय भीषण अकाल का सामना था और फसलें तथा फल पकने को थे। इस अकाल में लोग अपनी फसलें काटने की चिंता और तैयारी में थे कि धर्मयुद्ध पर निकलने की घोषणा हो गई। फिर भीषण गर्मी का मौसम और सैकड़ों मील की यात्रा, रास्ते के भोजन की कमी इसके अतिरिक्त थी। इन सब समस्याओं के होते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से जब धर्मयुद्ध पर जाने की घोषणा हुई तो निष्ठा और सच्चाई के प्रतिरूप जान-न्यौछावर अपनी तैयार फसलों और पके हुए फलों को छोड़कर यात्रा की तैयारी करने लगे। हालाँकि इतनी लंबी यात्रा की तैयारी इन निष्ठावान किंतु निर्धन सहाबा के लिए कोई सरल कार्य नहीं था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी कठिनाइयों की उन घड़ियों से भली-भाँति परिचित थे। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आर्थिक त्याग का सामान्य अभियान करते हुए धनवानों को अल्लाह के मार्ग में व्यय करने और सवारी उपलब्ध कराने का अभियान करते हुए कहा। مَنْ جَهَّزَ جَيْشَ الْعُسْرَةِ فَلَهُ الْجَنَّةُ अर्थात, जो व्यक्ति कठिनाईयों वाली सेना अर्थात तबूक के युद्ध को साज-सामान से सुसज्जित करेगा, उसे स्वर्ग मिलेगा।

(सहीह बुख़ारी, पुस्तक अल-वसाया, अध्याय: इज़ा वक़्फ़ा अर्ज़न औ बिअरन... नंबर 2778)

इस अवसर पर जो व्यक्ति सबसे पहले धन लेकर आया, वह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ी अल्लाहु तआला अन्हा थे। आप अपने घर का समस्त धन ले आए जो कि चार हज़ार दिरहम था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि क्या अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा है या नहीं? तो उन्होंने निवेदन किया कि घर वालों के लिए अल्लाह और उसका रसूल छोड़ आया हूँ।

एक परंपरा में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपना वृत्तांत बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें आदेश दिया कि हम दान करें और उस समय मेरे पास धन था। मैंने कहा कि यदि मैं उनसे कभी आगे निकल सका तो आज के दिन अबू बक्र से आगे निकल जाऊँगा। वे कहते हैं कि मैं अपना आधा धन लाया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा: तुमने अपने घर वालों के लिए क्या छोड़ा? मैंने निवेदन किया, जितना लेकर आया हूँ, उतना ही घर वालों के लिए छोड़ आया हूँ। और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो वह सब कुछ ले आए जो उनके पास था। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: हे अबू बक्र! तुमने अपने घर वालों के लिए क्या छोड़ा? वे कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने पूछा। उन्होंने निवेदन किया, मैंने उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को छोड़ा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं, मैंने कहा कि अल्लाह की शपथ! मैं उनसे किसी भी चीज़ में कभी भी आगे नहीं निकल सकता।

(सुनन अत-तिर्मिज़ी, अध्याय: मनाकिब, उप-अध्याय: रजाअहू अन याकूना अबू बक्र मिम्मन युदआ मिन जमीइ अबवाब अल-जन्ना, हदीस 3675)(शरह अल-अल्लामा अज़-ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 69, दारुल कुतुब अल-इलमिया, 1996 ई.)

इस घटना को हज़रत मसीह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी अपने शब्दों में इस प्रकार बयान फ़रमाया है कि "एक धर्मयुद्ध के अवसर के विषय में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं। मुझे विचार आया कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो सदैव मुझसे आगे निकल जाते हैं, आज मैं उनसे आगे निकलूँगा। यह सोचकर मैं घर गया और अपने धन में से आधा धन निकालकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में अर्पण करने के लिए ले आया। वह समय इस्लाम के लिए अत्यंत संकट का दौर था, किंतु हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो अपना समस्त धन ले आए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में समर्पित कर दिया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा: अबू बक्र! घर में क्या छोड़ आए हो? उन्होंने निवेदन किया: अल्लाह और उसका रसूल। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं, यह सुनकर मुझे गहन लज्जा हुई और मैंने समझा कि आज मैंने पूरा बल लगाकर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो से आगे निकलना चाहा था, किंतु आज भी मुझसे अबू बक्र आगे निकल गए।"

(फ़ज़ाइल अल-कुरआन (3), अनवार अल-उलूम, खंड 11, पृष्ठ 577)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 20 November 2025 Issue No. 47

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के आर्थिक त्याग के विषय में एक परंपरा है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन खब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसे बयान किया है कि मैं पैगंबर करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास उपस्थित था और आप कठिनाई वाली सेना के बारे में प्रेरित कर रहे थे, तो हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुए। उन्होंने निवेदन किया: हे अल्लाह के रसूल! मेरे ज़िम्मे एक सौ ऊँट, उनके काठियों और ज़ीनों सहित अल्लाह के मार्ग में हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सेना के बारे में प्रेरणा दी, तो हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान पुनः दूसरी बार खड़े हुए। उन्होंने निवेदन किया: हे अल्लाह के रसूल! मेरे ज़िम्मे दो सौ ऊँट, उनके काठियों और ज़ीनों सहित अल्लाह के मार्ग में हैं। यह सुनने के बावजूद आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पुनः सेना के बारे में दोबारा प्रेरणा दी, तो हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुए और निवेदन किया: हे अल्लाह के रसूल! मेरे ज़िम्मे तीन सौ ऊँट, उनके काठियों और ज़ीनों सहित अल्लाह के मार्ग में हैं। मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा कि आप मिम्बर से उतर रहे थे और आप कह रहे थे: مَا عَلٰى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ۔ مَا عَلٰى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ। अर्थात, उस्मान पर कोई पकड़ नहीं, जो कुछ भी उसने इसके बाद किया। उस्मान पर कोई पकड़ नहीं, जो कुछ भी उसने इसके बाद किया।

एक दूसरी परंपरा में है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरह रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कठिनाई वाली सेना की तैयारी करवाई, तो हज़रत उस्मान ने पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में एक हज़ार दीनार प्रस्तुत किए और उन्हें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गोद में डाल दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा, मैंने पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा, आप उन्हें (उन दीनारों को) अपनी गोद में पलट-पलट कर देख रहे थे और कह रहे थे: مَا ضَرَّ عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ الْيَوْمِ۔ अर्थात, उस्मान को कोई हानि नहीं पहुँचेगी, जो कुछ उसने आज के दिन के बाद किया। आपने दो बार यह कहा।

एक परंपरा के अनुसार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस अवसर पर दस हज़ार दीनार दान किए, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए यह प्रार्थना की: ग़फ़र अल्लाहु लका या उस्मानु मा असर-रता व मा अलनता व मा हुवा काइनन इला यौम अल-क़ियामा मा युबाली मा अमिला बअदहा। अर्थात, हे उस्मान! अल्लाह तुझसे क्षमा का व्यवहार करे, जो तूने गुप्त रूप से किया और जो तूने खुले तौर पर किया और जो क़यामत तक होने वाला है। इसके बाद वह जो भी कर्म करे, उसे कोई चिंता नहीं होनी चाहिए।

एक परंपरा के अनुसार आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस युद्ध की तैयारी के लिए एक हज़ार ऊँट और सत्तर घोड़े प्रस्तुत किए। एक परंपरा के अनुसार आप सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम ने इस अवसर पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के पक्ष में यह प्रार्थना की: अल्लाहुम्म अर्ज़ा अन उस्माना फ़इन्नी अन्हु राजिन। अर्थात, हे अल्लाह! तू उस्मान से प्रसन्न हो जा, क्योंकि मैं भी उससे प्रसन्न हूँ। इब्न इस्हाक बयान करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने तबूक के युद्ध के अवसर पर इतना धन व्यय किया कि कोई अन्य सहाबी इतना धन व्यय नहीं कर सका।

(सुनन अत-तिर्मिज़ी, अध्याय: मनाकिब, उप-अध्याय: फ़ी अद्दि उस्माना तस्मीयतहू शहीदन व तज्हीज़हू जैश अल-उसरा, हदीस 3700, 3701)(अस-सीरत अन-नबविया लि इब्न इस्हाक, खंड 2, पृष्ठ 596-597, दारुल कुतुब अल-इलमिया, 2004 ई.)(उद्धृत: शरह अल--अल्लामा अज़-ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 69 से 71, दारुल कुतुब अल-इलमिया, बेरूत, 1996 ई.)(अस-सीरत अल-हल्बिया, खंड 3, पृष्ठ 184, तबूक का युद्ध, दारुल कुतुब अल-इलमिया, बेरूत, 2002 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो का एक व्यापारिक काफिला सीरिया देश से बहुत अधिक लाभ लेकर वापस आया, तो उन्होंने एक-तिहाई सेना के समस्त व्यय अपने ज़िम्मे ले लिए। उन्होंने कहा, एक तिहाई सेना का खर्च मैं वहन करूँगा। आपने दस हज़ार से अधिक सेना का सामान उपलब्ध कराया और इस बात का प्रबंध किया कि प्रत्येक सैनिक के लिए एक-एक कमरबंद भी आपके पैसे से खर्च हो, अर्थात छोटी से छोटी वस्तु भी। इस पर उनके दस हज़ार दीनार व्यय हुए, जो ऊँटों और घोड़ों के अतिरिक्त थे। इसके अतिरिक्त एक हज़ार ऊँट, एक सौ घोड़े और अन्य सामान के साथ-साथ एक हज़ार दीनार भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में प्रस्तुत किए। यह एक हज़ार दीनार उन दस हज़ार दीनार से अलग थे, जो उन्होंने दस हज़ार सैनिकों की तैयारी पर व्यय किया था। इस अवसर पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक सौ 'औकिया' चाँदी प्रस्तुत की। कुछ परंपराओं के अनुसार दो सौ 'औकिया' चाँदी प्रस्तुत की। यह 'औकिया' भी एक भार है जो साढ़े दस तोले के बराबर होता है, अर्थात डेढ़ हज़ार या इक्कीस सौ तोले तक चाँदी, या यदि आजकल के समय में देखें तो सवा किलोग्राम या ढाई किलोग्राम चाँदी।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा: उस्मान बिन अफ़्फान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ धरती पर अल्लाह के खजानों में से खजाने हैं, जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए व्यय करते हैं। उन्होंने बहुत अधिक धन दिया। एक परंपरा में है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने चार सौ औकिया सोना प्रस्तुत किया था, अर्थात बयालीस सौ तोले सोना। कुछ ने नौ सौ ऊँट प्रस्तुत करने का भी उल्लेख किया है। बहरहाल, अनेक त्यागों का वर्णन है।

एक परंपरा के अनुसार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि मेरे पास आठ हज़ार दिरहम हैं। मैंने चार हज़ार दिरहम घर वालों के लिए रख लिए हैं और चार हज़ार आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें बरकत देते हुए कहा: بَارَكَ اللّٰهُ فِيْمَا اَمْسَكْتَ وَفِيْمَا اَعْطَيْتَ बारक अल्लाहु फ़ीमा अमसकता व फ़ीमा अअतैता। अर्थात, जो धन तुमने घर वालों के लिए रखा है और जो अल्लाह के मार्ग में दिया है, अल्लाह सबमें बरकत दे।

हज़रत आसिम बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हो ने सत्तर 'वस्क' खजूरें प्रस्तुत कीं। एक 'वस्क' साठ 'सा' का होता है और एक 'सा' लगभग तीन सेर का होता है, अर्थात कुल मिलाकर लगभग बारह हज़ार छह सौ किलोग्राम खजूरें होती हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में त्याग, अधिक त्याग, धन लाने वालों में हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत तलहा बिन उबैदु-ल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम भी मिलते हैं।

(शरह अल-अल्लामा अज़-ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, खंड 4, पृष्ठ 69, दारुल कुतुब अल-इलमिया, 1996 ई.)(अस-सीरत अल-हल्बिया, खंड 3, पृष्ठ 183-184, तबूक का युद्ध, दारुल कुतुब अल-इलमिया, बेरूत, 2002 ई.)(सीरत अल-हल्बिया का हिंदी अनुवाद, खंड 3, प्रथमार्ध, पृष्ठ 396-397, दारुल इशाअत, 2009 ई.)(पैगंबर सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम के युद्ध, लेखक: अल्लामा बुरहानुद्दीन हलबी, हिंदी अनुवाद, पृष्ठ 686, दारुल इशाअत, 2001 ई.)(अल-लौलु अल-मकनून, सीरत विश्वकोश, खंड 9, पृष्ठ 457, मकतबा दारुस्सलाम)(सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम की जीवनियाँ, खंड 1, पृष्ठ 161, दारुल इशाअत, कराची, 2004 ई.)(सहीह मुस्लिम - नूर फाउंडेशन - खंड 12, पृष्ठ 184)(फ़रहंग-ए--सीरत, पृष्ठ 49, ज़वार एकेडमी प्रकाशन, कराची, 2003)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "एक वह समय था कि खुदा तआला के धर्म पर लोग अपनी जानों को भेड़-बकरी की भाँति न्यौछावर करते थे, धनों का तो क्या उल्लेख। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ी अल्लाहु तआला अन्हा ने एक से अधिक बार अपना संपूर्ण घर-बार न्यौछावर किया, यहाँ तक कि सुई तक को भी घर में नहीं छोड़ा और ऐसा ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी सामर्थ्य और विस्तार के अनुरूप और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी शक्ति और हैसियत के अनुरूप, इसी प्रकार, सभी सहाबा अपनी जानों और धनों सहित इस खुदा तआला के धर्म पर बलिदान होने के लिए तैयार हो गए।"

शेष ..

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad